भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ४८

सोमवार १ सितम्बर, '६९

अन्य पृष्ठों पर

गौरवपूर्ण इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ी —सम्पादकीय ६०३

शाहाबाद जिलादान-समर्पण समारोह —राही ६०४

प्रेरणा के ये स्वर —अमरनाथ ६०५

बँगाली-गोष्ठी —रामभूषण ६०७

यदि मैं जिला-संयोजक होता तो... —ठाकुरदास बंग ६१०

विश्व में गांधी-शताब्दी —प्रभाष जोशी ६१३

आपके पत्र; पुस्तक-परिचय; आन्दोलन-समाचार

श्रद्धांजलि

भरे हृदय से हमें यह सूचित करना पड़ रहा है कि श्री रावसाहब पटवर्धन अब नहीं रहे! २८ अगस्त '६९ की सुबह आप दिवंगत हो गये! पूना में जब हम ३ मार्च को उनसे मिले थे, तो उन्होंने ग्रामस्वराज्य आन्दोलन के प्रति आत्मीयता व्यक्त करते हुए इसकी सफलता की कामना की थी। क्रान्तिकारी स्वर्गीय राव-साहब का आशीर्वाद हमें बराबर प्रेरणा देता रहेगा। सर्वोदय-परिवार की ओर से उनकी दिवगंत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि!

सम्पादक
राजमूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी—१ उत्तरप्रदेश
फोन : ४२८५

कांग्रेस : सत्याग्रही या सत्ताग्रही ?

हर कांग्रेस कमेटी को सत्याग्रह कमेटी बन जाना चाहिए और जिन लोगों का सबके प्रति सद्भाव पैदा करने में विश्वास हो, जिनमें किसी भी रूप में छुआछूत की भावना न हो, जो नियमित रूप से कातते हों और जो सब तरह का कपड़ा छोड़कर आदतन खादी पहनते हों, उन सबके नाम लिख लेने चाहिए। मैं आशा रखता हूँ कि जो लोग अपनी कमेटियों में इस तरह नाम लिखायेंगे वे अपना सारा फालतू समय रचनात्मक कार्यक्रम में लगायेंगे। कमेटियों के इलाके में एक भी कांग्रेसी ऐसा न बच रहें, जो खद्दर के सिवाय और कोई कपड़ा पहनता हो।

सत्याग्रही रोजनामचा रखें और नित्य जो काम करें, उसमें लिखते जायँ। अपनी कताई के अलावा उनका काम यह होगा कि चवन्नी मेम्बरों के पास जायें और उन्हें खादी इस्तेमाल करने, कातने और अपने नाम लिखाने को को समझाएँ। मेम्बर ऐसा करें या न करें, उनके साथ संपर्क जरूर बना रहना चाहिए।

हरिजनों के घर भी जाते रहना चाहिए और जहाँ तक हो सके उनकी दिक्कतें मिटानी चाहिए।

यह कहने की तो जरूरत ही नहीं कि नाम उन्हींके लिखने चाहिए, जो जेल के कष्ट उठाने को रजामन्द और समर्थ हों।

सत्याग्रही कैदियों को अपने या अपने आश्रितों के लिए किसी तरह की आर्थिक सहायता की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।

ऐसे समय में जब कि संसार भर में हिंसक शक्तियाँ खुलकर अपना खेल खेल रही है और अधिक-से-अधिक सभ्य कहलानेवाले राष्ट्र अपने झगड़े निपटाने के लिए शस्त्र के सिवाय और किसी बल का ख्याल भी नहीं कर सकते, मुझे आशा है कि हिन्दुस्तान यह कह सकेगा कि उसने विशुद्ध अहिंसक उपायों से अपनी आजादी की लड़ाई लड़ी और जीत ली।

मेरे दिमाग में यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि राजनैतिक विचार रखनेवाले हिन्दुस्तानियों का सहयोग मिल जाय तो भारत को शुद्ध अहिंसा के जरिये आजादी हासिल होना पूरी तरह संभव है। हम जो अहिंसा का दंभ करते हैं, उस पर दुनिया का विश्वास नहीं है। दुनिया की बात जाने दीजिए, मैं तो सेना-पति बन बैठा हूँ। मैंने ही बार-बार स्वीकार किया है कि हमारे दिलों में हिंसा है और अवसर आपस के व्यवहार में एक-दूसरे के साथ हम हिंसक हो जाते हैं। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि जबतक हममें हिंसा है तबतक मैं नहीं लड़ सकूँगा।

मो. क. गांधी

रामगढ़-कांग्रेस : सन् १९४० में दिये गये भाषण से।

आपके पत्र

आगामी सर्वोदय-सम्मेलन : कुछ विचारणीय सुझाव

'भूदान-यज्ञ' के ४ अगस्त के अंक में प्रकाशित अठारहवें अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन का समाचार कि २५ अक्तूबर से २८ अक्तूबर '६९ तक होनेवाला अन्तर-राष्ट्रीय सर्वोदय-सम्मेलन उस ऐतिहासिक घड़ी में होगा, जब कि ग्रामस्वराज्य आन्दोलन का एक नया क्षितिज प्रकट होने जा रहा है बिहारदान के रूप में, पढ़कर खुशी हुई। इस सम्मेलन के ऐतिहासिक महत्त्व को सामने रखते हुए इसे व्यापक, प्रभावशाली एवं सार्थक करने के लिए मेरे मन में कुछ बातें हैं, जिनकी ओर सम्मेलन के आयोजकों का ध्यान विनम्रतापूर्वक आकृष्ट करना चाहता हूँ।

पहली बात तो यह है कि सम्मेलन के पूर्व होनेवाले अधिवेशन की अवधि लम्बी होनी चाहिए, क्योंकि इसमें सारे देश के प्रतिनिधि आते हैं। उनके अपने प्रश्न और समस्याएँ होती हैं, उनको भी अपनी बात कहने का अवसर मिलना चाहिए और अधिवेशन में भाषणों के बजाय 'टोलियों' में चर्चा होनी चाहिए।

दूसरी बात, क्योंकि हम सब ग्राम-स्वराज्य की दिशा की ओर चलनेवाले साथियों के मन में देश और दुनिया की समस्याओं के संदर्भ में बराबर चिन्तन चलता रहता है और सर्वोदय-सम्मेलन के मंच से इस संदर्भ में देश के लोग हमारी राय जानना चाहते हैं, इसलिए ऐसी समस्याओं के बारे में स्पष्ट चिंतन इस अवसर पर प्रकट होना चाहिए। सम्मेलन के मंच से समाज परिवर्तन की हमारी अगली स्ट्रेटजी (समर-नीति) की भी स्पष्ट घोषणा होनी चाहिए।

तीसरी बात, सारे देश में ग्रामदानों की संख्या लगभग सवा लाख के है। इन गाँवों के प्रतिनिधियों को सर्वोदय-सम्मेलन में जत्थों के रूप में आने के लिए प्रेरित और आमंत्रित किया जाय। मुझे पूरी उम्मीद है कि लोग अवश्य आयेंगे और बाद में हमारे आन्दोलन के लिए उपयोगी होंगे। जरा कोशिश तो की जाय! एक बात मुझे बराबर खटकती है कि सम्मेलन के अवसर पर प्रदर्शनी और अनावश्यक प्रदर्शनों पर पैसा बरबाद करना ठीक नहीं है। क्योंकि हमारे सम्मेलन लगभग शहरों के नजदीक ही होते हैं। इसलिए जनता साल में कई-कई सरकारी, गैर-सरकारी प्रदर्शनियाँ देख चुकी रहती है। इसके स्थान पर सम्मेलन और अधिवेशनों में आनेवाले प्रतिनिधि संकीर्णता के बजाय व्यापक जनसंपर्क और उदारचित्तता की ओर बढ़ें तो लोकमानस पर अच्छा और गहरा असर पड़ सकता है।

चौथी बात, लेकिन सम्मेलन के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है कि इस सर्वोदय-सम्मेलन का और सम्मेलनों की अपेक्षा विशिष्ट ऐतिहासिक महत्त्व है। जिस तरह चांडिल के सर्वोदय के सम्मेलन में एक तरह से भूदान-आन्दोलन के व्यापक और गहरे क्रान्तिकारी सन्दर्भ की घोषणा हुई थी, उसी तरह से इस सम्मेलन में आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन तथा समाज-रचना की हमारी परिकल्पना देश और दुनिया के सामने स्पष्ट होनी चाहिए। यों तो बाबा खुद सम्मेलन में रहेंगे, ऐसी आशा है; लेकिन साथ ही सम्मेलन का अध्यक्ष भी ऐसे व्यक्ति को बनाया जाना चाहिए, जो इस "इमेज" को प्रभावशाली ढंग से देश और दुनिया के सामने प्रस्तुत कर सके।

एक अंतिम सुझाव यह है कि सर्व सेवा संघ को चाहिए कि वह 'प्रेस टीम' बनाये, ताकि सम्मेलनों के अवसर पर रोज-रोज के समाचार सबके लिए सुलभ हो सकें। सर्व सेवा संघ के पास पत्रकारों की कमी नहीं है, सिर्फ जरूरत है इस दिशा में पहल करने की।

— आनन्द प्रियदर्शी

सत्यनगर, रायबरेली

सुश्री कान्ता-हरविलास बहन का पराक्रम

राजकोट प्रबन्ध समिति में सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री एस० जगन्नाथन् की अपील पर बिहारदान के काम में सहयोग देने के लिए आयीं गुजरात की सुप्रसिद्ध युगल-जोड़ी (कान्ता-हरविलास) ने ग्रामदान के काम के लिए चाईबासा में साढ़े सात हजार, चक्रधरपुर में साढ़े सात हजार और धनबाद में पैंतालीस हजार रुपये एकत्रित किये। उनका यह स्तुत्य प्रयास अभी भी जारी है। आप लोगों के साथ गुजरात के प्रमुख कार्यकर्ता डा० नवनीत फौजदार भी काम में लगे हुए हैं।

श्री जयप्रकाश नारायण को ४९,५०० रु० की थैली भेंट

बिहारदान के लिए तूफानी दौरे का एक चरण पूरा

बिहार ग्रामदान-प्राप्ति संयोजन समिति के प्रचार-मंत्री श्री रामनन्दन सिंह ने हमारे प्रतिनिधि को एक भेंट में बताया कि पिछली २२ अगस्त से २८ अगस्त तक की हुई जे०पी० की तूफानी यात्रा से राँची, सिंहभूम और संतालपरगना के काम में काफी अनुकूलता पैदा हुई है। अब बिहार के कुल १७ जिलों में से शेष ३ जिलों—राँची, सिंहभूम और संतालपरगना में—क्रमशः ३३, १२ और १४ प्रखण्ड बाकी हैं, जहाँ काम काफी गति से चल रहा है। इस यात्रा में जे० पी० को ४९,५०० रुपये की थैली भी ग्रामदान के काम के लिए भेंट में प्राप्त हुई है।

गौरवपूर्ण इतिहास की महत्त्वपूर्ण कड़ी

दुनिया के इतिहास में बिहार ही वह प्रदेश है, जहाँ सबसे पहले गणतंत्रीय व्यवस्था कायम हुई थी। बिहार के एक भाग में यह जो नयी व्यवस्था कायम हुई थी, उस पर हम आज भी गौरव का अनुभव करते हैं। क्योंकि उसमें किसी एक राजा की नहीं, लोगों की मिली-जुली शक्ति यानी 'संघ' की शक्ति इस रूप में पहली बार प्रकट हुई थी। वैशाली के उस गणतंत्र की शक्ति तब टूटी थी, जब उसकी एकता खण्डित हुई थी, यह हम सब जानते हैं। भगवान बुद्ध ने यही कहा था कि यह गणराज्य तबतक अटूट और अजेय बना रहेगा, जबतक इसकी एकता कायम रहेगी।

उस जमाने का वह गणतंत्र तो टूट गया। लेकिन एक राजा के शासन से निकलकर समूह की शक्ति से समाज को चलाने की मनुष्य की आकांक्षा नहीं टूटी और लम्बे समय के फेरबदल के बाद लोकतंत्र की व्यवस्था कायम हुई। भारत में भी गणतंत्र की स्थापना हुई। जनता के चुने गये प्रतिनिधियों द्वारा समाज को संचालित करने की व्यवस्था कायम हुई। इस व्यवस्था के ढाँचे को बनाये रखने के लिए विभिन्न राजनीतिक विचार-धाराएँ विकसित हुईं, उनके 'दल' बने।

लेकिन इतने वर्षों की भारत की गणतंत्रीय व्यवस्था में से वह 'एकता' नहीं विकसित हुई, जिसे भगवान बुद्ध ने गणतंत्र की अटूट और अजेय शक्ति कहा था। इसका परिणाम आप सबके सामने प्रत्यक्ष है। यह दिखाई देता है कि लोकतंत्र की व्यवस्था को कायम रखने के लिए बिलकुल नये ढंग से सोचने और करने की आवश्यकता है।

यह एक सुसंयोग है कि आचार्य विनोबा भावे द्वारा प्रेरित ग्रामस्वराज्य के आन्दोलन में बिहार ने अगुवाई की है, और बिहारदान की एक मंजिल पूरी होने ही वाली है। यानी बिहार के गाँवों ने ग्रामदान का संकल्प करके अपने यहाँ ग्रामस्वराज्य की स्थापना की घोषणा की है। परिस्थिति के इशारे को समझकर आनेवाले इतिहास में यह उचित समय पर की गयी महत्त्वपूर्ण घोषणा मानी जायगी। क्योंकि समाज और देश को कमजोर बनानेवाली, भेद और फूट बढ़ानेवाली बातें तेजी से, बड़े पैमाने पर बढ़ और फैल रही हैं। ऐसी स्थिति में एकता बढ़ाने और समाज को संगठित करनेवाली कोशिशों का खास महत्त्व है।

बिहार के गाँवों की जनता ने 'ग्रामदान' के घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करके 'एक बनने और नेक बनने' का यह जो संकल्प किया है, उस संकल्प की प्रेरणा देने में आचार्य विनोबा भावे का प्रभाव, विचार की शक्ति तो प्रमुख रही ही है, लेकिन उसके साथ ही बिहार के हजारों चेतन व्यक्तियों ने इसके लिए जो महत्त्वपूर्ण योगदान किया है, वह अत्यन्त महत्त्व का है। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात है खुद गाँववालों द्वारा ग्रामदान-पत्र पर हस्ताक्षर किया जाना। इतिहास में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलेंगे कि किसी एक विचार पर अपने बहुत सारे छोटे-बड़े भेदों को भुलाकर इतनी बड़ी जनसंख्या ने अपनी सहमति जाहिर की हो, और सक्रियता दिखाई हो। यह मनुष्य के 'एक होने और नेक होने' की शाश्वत आकांक्षा का इजहार है।

भारत की बुनियादी शक्ति गाँवों में है। ये गाँव कैसे एक बनें, और इनकी समूह-शक्ति विकसित हो, ताकि पूरे देश का ढाँचा एकता की ठोस बुनियाद पर खड़ा हो, यह भारतीय लोकतंत्र के जीवन-मरण का सवाल बन गया है। बिहार के गाँवों ने इस सवाल को हल करने की कोशिश शुरू कर दी है, यह गौरव की बात है। लेकिन ग्रामदान के घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर इसका पहला ही कदम है। मंजिल तक पहुँचने के लिए एक कदम का उठा लेना ही काफी नहीं है, दूसरे कदमों का उठाया जाना और भी अधिक आवश्यक है।

वे दूसरे कदम भी पहले कदम की तरह गाँववालों को ही उठाने होंगे। यह ग्रामस्वराज्य की बुनियादी बात है कि गाँववालों के किये बिना ग्रामस्वराज्य का कोई काम नहीं हो सकता। इसलिए ग्रामदान के बाद गाँव की शक्ति को समूह में संगठित करने के लिए ग्रामसभा का गठन अत्यन्त महत्त्व का, और ग्रामदान की घोषणा के बाद का दूसरा कदम है। गाँव-गाँव में गाँव के सभी बालिग लोगों को मिलाकर ग्रामसभा बने, गाँव में बसे हर आदमी में गाँव के साथ लगाव की भावना पैदा हो, ग्रामसभा सबके हित के बारे में सोच-विचार करे और गाँव के सबसे नीचे के दुखी पीड़ित लोगों के जीवन को सुखी बनाने की चिन्ता करे, तभी गाँव में एकता की शक्ति पैदा होगी। इसके लिए ग्रामसभा ग्रामदान की अन्य बातों—बीघे में कट्ठा जमीन निकालकर भूमिहीन को देना, ग्रामकोष इकट्ठा करना, और ग्राम शान्तिसेना बनाना—को पूरा करे, यह बहुत ही जरूरी और ग्रामस्वराज्य के बुनियादी काम हैं।

यह सबके समझने की बात है कि इन कामों को करने में अहित किसीका नहीं है, सबका हित ही होनेवाला है। परिस्थिति ऐसी बनती जा रही है, कि आज की हालत जैसी-की-तैसी नहीं रहनेवाली है। उसमें परिवर्तन तो होने ही वाला है। इस स्थिति में अगर परिवर्तन की प्रक्रिया को अपने अनुकूल बना लिया गया, तो सबका हित होगा, गाँव नहीं टूटेगा, और देश को एक नयी दिशा मिलेगी। बिहार के गाँवों को यह नयी राह दिखाने का अवसर मिला है, जो इसकी वैशाली गणराज्यों की गौरवशाली परम्परा की ही एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। लेकिन, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, यह सब खुद गाँव के लोगों के किये ही हो सकता है।

तूफान से भी तेज गति से बदल रहे जमाने में अगर यह काम एक निश्चित अवधि के अन्दर पूरा नहीं किया गया तो अबतक के सारे प्रयास निरर्थक साबित हो सकते हैं। इसलिए हम बिहार के ग्रामीण भाई-बहनों, चेतन नागरिकों और नयी पीढ़ी के जिम्मेदार युवकों से अपील करते हैं कि वे इस काम को पूरा करने में जुट जायँ, और नये इतिहास के निर्माता बनें।●

बिहार के चौदहवें जिलादान (शाहाबाद) का समर्पण-समारोह सम्पन्न

www.vinoba.in

प्रदेश के लगभग पचास हजार गाँव ग्रामदान में

राँची, सिंहभूम, संतालपरगना के आदिवासी क्षेत्रों में अभियान की रफ्तार तीव्रतर

बिहारदान की मंजिल सन्निकट

आरा : २८ अगस्त। आज सायं साढ़े पाँच बजे शाहाबाद जिले के हजारों नागरिकों की उपस्थिति में जिले के वयोवृद्ध सम्माननीय नेता श्री प्रद्युम्न मिश्र द्वारा जिलादान का काम पूरा होने की घोषणा की गयी। इस घोषणा-समारोह का पूरा आयोजन सर्वोदय-नेता श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। समारोह-सभा का सभापतित्व किया इस क्षेत्र के संसद-सदस्य श्री शिवपूजन शास्त्री ने, जो दिल्ली से खास तौर पर इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए ही पधारे थे।

जिले के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता श्री सूर्यनाथ चौबे ने, जो इस समारोह के स्वागताध्यक्ष थे, अपने स्वागत-भाषण में कहा, "जान पड़ता है कि विनोबा की यह क्रान्ति रुकनेवाली नहीं है। शाहाबाद की ओर से हम अपने नेता (जयप्रकाश नारायण) को यह आश्वासन देते हुए स्वागत करते हैं कि स्वराज्य को धरती पर उतारने के इस काम में हम पीछे नहीं रहेंगे।"

श्री प्रद्युम्न मिश्र ने जिलादान की घोषणा करते हुए कहा, कि "जिले के कुल ४१ प्रखण्ड ग्रामदान में आ चुके हैं। यानी जिले के कुल ५,६७१ गाँवों में से, १,२१४ बेचिरागी गाँवों को छोड़कर, ४,५३६ गाँव ग्रामदान में आ चुके हैं। जिले की कुल जन-संख्या का ८१ प्रतिशत और भूमि का ५१ प्रतिशत ग्रामदान में शामिल है।"

इस समारोह का आयोजन बरसात की आशंका से आरा शहर स्थित नागरी प्रचारिणी के सभा-भवन में किया गया था। लेकिन भीड़ इतनी थी कि सभा-भवन में उसका अँटना असम्भव हो गया। और आखिर में श्री जयप्रकाश नारायण का भाषण बाहर खुले मैदान में हुआ।

इस सभा के सभापति श्री शिवपूजन शास्त्री ने कहा, "सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रान्ति का यह एक अभिनव प्रयोग है। भारत में ही स्वराज्य-प्राप्ति के लिए नये तरीकों के प्रयोग हुए, अब इस क्रान्ति के लिए भी हो रहे हैं।....अनुभव और अटूट साहस लेकर युगपुरुष इतिहास का निर्माण करते हैं। जे० पी० उन्हीं लोगों में से हैं।"

अपने ढाई घंटे के लम्बे भाषण में जयप्रकाशजी ने ग्रामदान से जिलादान तक की सारी प्रक्रियाओं की व्यावहारिक जानकारी दी, और यह स्पष्ट किया कि किस तरह ग्रामदान से जिलादान तक की मंजिल पूरी होती है। इसके बाद बिहार, देश और दुनिया की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए श्री जयप्रकाश नारायण ने क्रान्ति के तीन माध्यमों—कानून, कत्ल और करुणा—का ऐतिहासिक हवाला प्रस्तुत किया और अत्यन्त प्रभावकारी शैली में कहा, "लोगों का भ्रम है कि कत्ल से क्रान्ति जल्दी होती है। क्रान्ति के दो हिस्से होते हैं, वर्तमान ढाँचे को समाप्त करना और नये ढाँचे का निर्माण करना, जिसके लिए क्रान्ति का आह्वान किया जाता है। लेकिन इतिहास साक्षी है, उदाहरण के लिए दुनिया की दो प्रमुख क्रान्तियों—फ्रांस और रूस—का इतिहास, कि एक-एक हिंसक क्रान्ति में १००–१५०–२०० साल तक लग जाते हैं, फिर भी घोषित लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते। मौजूदा ढाँचा ढहता है, तो जो नया ढाँचा खड़ा होता है, उसमें सत्ता काम करनेवाली जनता के हाथ में नहीं रहती, दल के नेता या तानाशाह के हाथ में होती है।" इसी सिलसिले में माओ की जगत्-प्रसिद्ध उक्ति "सत्ता का जन्म बन्दूक की नली में से होता है" को उद्धृत करते हुए कहा, "बन्दूक की नली से सत्ता का जन्म होता है, तो क्या वह बन्दूक चीन के किसानों-मजदूरों के हाथ में है? नहीं, वह तो सेना के हाथ में है, और उस सेना पर जिसका अधिकार है, उसीकी सत्ता है।"

अंत में आपने जिले की जनता, चेतन नागरिकों और कार्यकर्ताओं को—जिन्होंने जिलादान को पूर्ण करने में अपनी शक्ति लगायी—हार्दिक बधाई देते हुए आगे के कामों को दुगुनी शक्ति और उत्साह से पूरा करने की अपील की।

आपने कहा, "गाँव-गाँव में ग्रामसभा का संगठन हो, बीघा-कट्ठा निकले, ग्राम-कोष स्थापित हो, तो हर गाँव में ग्रामराज की नींव पड़ेगी, जिस नींव पर हमें आज के कमजोर और अस्थिर लोकतंत्र की जगह शक्तिशाली और स्थिर लोकतंत्र की स्थापना करनी है।"

जिला ग्रामदान-प्राप्ति समिति के सह-संयोजक श्री राधामोहन राय ने समिति की ओर से कृतज्ञता प्रगट करते हुए आगे के काम को संयोजित करने के लिए जिलास्तरीय ग्रामस्वराज्य समिति के गठन हेतु सासाराम में ६ सितम्बर को होनेवाली बैठक की सूचना दी।

जिलादान को पूर्णता की मंजिल तक पहुँचाने में मुजफ्फरपुर, दरभंगा और गया के कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। शाहाबाद के जिला सर्वोदय-मण्डल, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, ग्रामदान-प्राप्ति समिति की शक्ति तो लगी ही, जिले के सरकारी कर्मचारियों ने भी भरपूर सहयोग दिया। प्रदेश की रचनात्मक संस्थाओं के कई प्रमुख लोगों ने प्रत्यक्ष काम में जुटकर, संयोजन कर इस कठिन जिले का दान सम्भव बनाया।

—राही

तरुण शान्ति सेना

www.vinoba.in

प्रेरणा के स्वर

आजकल जागतिक स्तर पर अपने देश में भी युवकों के अन्दर उथल-पुथल मची हुई है। इस स्थिति में नितान्त आवश्यकता इस बात की है कि इन युवकों के पुरुषार्थ को रचनात्मक दिशा दी जाय। अखिल भारत शांति-सेना मण्डल द्वारा तरुण शांति सेना के माध्यम से एक नम्र प्रयास इस संदर्भ में प्रारम्भ हुआ है। तरुण शांति-सेना के संगठन की दृष्टि से बिहार की शिक्षण संस्थाओं में चर्चा के दौरान, विशेष रूप से हाईस्कूल तथा हायर सेकेण्डरी स्कूल में पढ़ रहे छात्र छात्राओं द्वारा, व्यक्त किये गये विचार बहुत ही प्रेरक लगे। विद्यालयों में इन बच्चों के समक्ष तरुण शांति-सेना के बारे में व्याख्यान देने की बजाय चर्चा करना ही ज्यादा आकर्षक और उपयोगी लगा। उनके साथ के हुए कुछ प्रश्नोत्तर हम नीचे दे रहे हैं :

"आज के समाज को क्यों बदलना चाहते हैं ?"

इस प्रश्न के उत्तर में विभिन्न स्कूल के बच्चों ने जो जवाब दिये हैं, वे इस प्रकार हैं :

क्योंकि आज के समाज में जातीयता, दलबंदी, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, तोड़फोड़, हिंसा, भुखमरी, गरीबी, विषमता, अज्ञानता, शोषण, द्वेष, एकता का अभाव, अनुशासनहीनता, परावलम्बन, भाषा-समस्या, राजनीतिक अस्थिरता, साम्प्रदायिकता, छुआछूत, ऊंच-नीच का भेदभाव, यातायात के साधनों का अभाव, नशाखोरी, अन्ध विश्वास, रूढ़ियाँ, स्त्री-परतंत्रता, फैशनपरस्ती, भाग्यवादिता, उत्तरदायित्व का अभाव, श्रम की अप्रतिष्ठा, खेती का पिछड़ापन, न्याय की कुव्यवस्था, प्रतिद्वन्द्विता की भावना, वैज्ञानिकता की कमी, व्यक्तित्व के विकासार्थ समुचित अवसर का अभाव, पद लोलुपता, स्वस्थ मनोरंजन का अभाव, योग्य नेतृत्व की कमी, जन-संख्या की वृद्धि, पूँजीवाद का बढ़ाव, राष्ट्रीयता की कमी, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ आदि रोग हैं, इन्हें दूर कर हम नया समाज बनाना चाहते हैं।

छपरा के लोकमान्य विद्यालय में "इस समाज को कौन बदलेगा ?" के उत्तर में एक छात्र ने कहा, "गांधी-विनोबा जैसे व्यक्ति पैदा होंगे, उन्हींके द्वारा यह समाज बदला जा सकेगा।" इतना सुनते ही उसकी पिछली बेंच पर बैठा लड़का उठकर बड़े तपाक से बोला, "इस समाज को हम सब बदलेंगे। हम किसी गांधी-विनोबा की प्रतीक्षा करते नहीं बैठेंगे।"

सीवान के आर्य कन्या विद्यालय में "आप लोग जिस प्रकार का समाज बनायेंगे, वह कैसा होगा ?" के उत्तर में एक छात्रा ने कहा, "हम जो समाज बनायेंगे, उसमें वकील नहीं होगा।" मुझे उसकी बात सुनकर 'हिन्द स्वराज्य' में उल्लिखित गांधीजी की वह बात याद आ गयी कि वकील, डाक्टर, और ट्रेन समाज के लिए अभिशाप हैं। 'हिन्द स्वराज्य' में गांधीजी द्वारा व्यक्त किया गया वह विचार आज इस लड़की के मुँह से सुनने को मिला। वहीं बैठी विद्यालय की प्रधानाध्यापिकाजी ने कहा कि "उसके पिताजी वकील हैं।" मैंने उस बहन से पूछा, 'तू अपने पिताजी से लड़ाई करेगी क्या ?' उसने जवाब दिया, लड़ाई करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम लोगों को समझायेंगी, कि लड़ाई-झगड़ा करना ठीक बात नहीं है। यदि कभी हो भी जाय, तो आपस में ही सुलझा लेना चाहिए, अदालत में नहीं जाना चाहिए। जब लोग अदालत में जायेंगे नहीं, तो फिर पिताजी की वकालत अपने आप समाप्त हो जायेगी !"

हाजीपुर के एक विद्यालय में एक लड़की ने जवाब दिया, "हम जो समाज बनायेंगे, उसमें डाक्टर नहीं होंगे।" "डाक्टर क्यों नहीं होंगे ?" के उत्तर में उसने जवाब दिया, "क्योंकि डाक्टर रोगी की नब्ज बाद में देखते हैं, जेब पहले देखते हैं।" उसी विद्यालय में राजनीतिक अस्थिरता की चर्चा के सिलसिले में कुछ ऐसा प्रसंग आया, जिसमें मैंने कहा कि "इतनी स्पष्टता से तुम सब ये सारी बातें बड़ी आसानी से समझ जाती हो, लेकिन दिल्ली और पटना में बैठे हुए हमारे नेताओं की समझ में तो ये बातें आती ही नहीं !" जवाब में दो-तीन लड़कियाँ एकसाथ बोल उठीं, "उन लोगों को हम सब जाकर समझायेंगी।"

दहेज लेना एक स्वर से बुरा कहने पर एक हाईस्कूल में मैंने छात्रों से पूछा, "आप लोग स्वयं दहेज लोगे कि नहीं ?" सभी ने कहा "नहीं लेंगे।" मैंने एक लड़के से पूछा, "तुम्हारे पिताजी कहेंगे कि तुम्हें पढ़ाने-लिखाने में इतना सारा खर्च किया, यही तो एक मौका है पाई-पाई वसूल कर लेने का। इसे भी तुम गवाँ दे रहे हो। तब पिताजी से क्या लड़ाई करोगे ?" उसने जवाब दिया, "समाज में कुछ भली बातें आती हैं, उसके लिए पिताजी से भी नाराजगी लेनी हो, तो कुछ हर्ज नहीं है।" दूसरे लड़के ने कहा, "हम पिताजी को समझायेंगे।" मैंने उन मित्रों से कहा, "आप लोगों जैसा ही इस देश में एक सत्याग्रही पुत्र प्रह्लाद भी पैदा हुआ था, जो अपने पिताजी से मतभेद रखता था।"

मुजफ्फरपुर जिले के वैशाली प्रखण्ड के चिन्तमणिपुर हाईस्कूल में "समाज बदलने का क्या रास्ता होगा ?" इस प्रश्न के उत्तर में दो लड़कों ने हिंसक क्रांति के रास्ते को अपनाने की बात कही, जब कि सभा में बैठे दो सौ छात्र ने प्रेम और शांति के रास्ते को उचित और सार्थक बताया। उन दो में से बारह वर्ष की उम्र के एक छात्र से मैंने पूछा, "क्यों हिंसक क्रांति करना चाहते हैं ?" मेरी बात सुनकर बगल में बैठे शिक्षक महोदय ने कहा, "यह छोटा-सा बच्चा क्या बतायेगा ?" उनकी बात समाप्त भी नहीं हो पायी थी कि उस लड़के ने जवाब दिया, "अमीर लोग गरीबों को सता-सताकर धन इकट्ठा किये हुए हैं। उनकी हत्या करके वह धन फिर से गरीबों में बाँटना होगा।" हिंसक रास्ते से वर्तमान समाज नष्ट तो हो जायेगा, लेकिन

नये समाज का निर्माण नहीं हो सकेगा। क्रांति के उद्घोषित मूल्य हिंसक रास्ते से नहीं प्रतिष्ठित किये जा सके हैं, ऐसा फ्रांस, रूस, चीन आदि की हिंसक क्रांतियों से लगता है। इस तरह थोड़ा समझाने पर उस लड़के ने तो हिंसक रास्ते की व्यर्थता स्वीकार कर ली, लेकिन दूसरा भाई अन्त तक हिंसक क्रांति के पक्ष में डटा रहा। सभा समाप्त होने के बाद जब मैं उससे मिला, तो उसने हमें नक्सालवादी विचारधारा की 'समाजवादी सलाहकार' नामक एक पत्रिका दी। बैठक में उस भाई ने कहा था कि जयप्रकाशजी ने भी नक्सालवादियों के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की है। उसी पत्रिका में हिंसक क्रांति के पक्ष में या सहानुभूति में देश-विदेश के भूतपूर्व और वर्तमान विचारकों के उद्धरण दिये हुए थे।

जिला स्कूल मुजफ्फरपुर की सभा में लगभग ५० विद्यार्थी बैठे हुए थे। "समाज किस रास्ते बदलना चाहेंगे?" के उत्तर में दो विद्यार्थियों को छोड़कर शेष सभी ने खूनी क्रांति के पक्ष में अपना हाथ उठाया था। चर्चा के अन्त में सभी शांति और प्रेम से समाज बदलने के औचित्य से सहमत हो गये।

कुछ प्रश्नों का एक-सा उत्तर :

'समाज कौन बदलेगा?'

'हम सब नौजवान लोग बदलेंगे।'

'आपको कैसा बनना पड़ेगा उसके लिए?'

'समाज में आज जो बुराइयां हैं, उनसे मुक्त होने का प्रयास करेंगे।'

'समाज कैसे बदलेंगे?'

'प्रेम से, शांति से, विचार-परिवर्तन से, अहिंसा से।'

'आप कैसा समाज बनायेंगे?

'आज के समाज में व्याप्त सम्पूर्ण बुराइयों से मुक्त।'

लगभग सभी विद्यालयों में चर्चा के अन्त में यह पूछने पर कि आप लोग अपने यहां तरुण-शांति-सेना केन्द्र स्थापित करना चाहते हैं? समवेत स्वर से "जी हां" की आवाज आती थी। फिर सर्वसम्मति से संयोजक और सह-संयोजक चुनने की बात उनसे कही जाती थी। दो-चार मिनट आपसी चर्चा के बाद क्रमशः दो नामों का चुनाव सर्वसम्मति से वे लोग कर लेते थे। सभा में बैठे शिक्षक-बन्धुओं को, हम सबको, बड़ा कौतुक-सा लगता था कि इन विद्यार्थियों में अलग-अलग कक्षाओं के हैं, इनका अलग-अलग 'ग्रूप' भी होगा, बहुत दिनों से साथ रहते हैं, तो थोड़ा आपसी राग-द्वेष का होना भी स्वाभाविक है। इन सबके बावजूद इतनी आसानी से एक विद्यार्थी को चुन लेना और फिर उसके पक्ष में सभी का हाथ उठ जाना, सचमुच किसी नये आयाम का संकेत है। एक विद्यालय में तो एक शिक्षक महोदय ने कहा कि राजनीतिक पार्टियों के साधारण से चुनाव में भी सर्वसम्मति तो दूर रही, कभी-कभी हाथापाई तक की नौबत आ जाती है। छात्रों के साथ की चर्चा डेढ़ घंटे से दो घंटे तक चलती थी। काफी जमकर उत्साहपूर्वक वे लोग इन चर्चाओं में भाग लेते थे। कभी-कभी तीन-साढ़े तीन बजे सभा शुरू होती थी, तो चार बजे स्कूल बन्द हो जाने के बाद भी साढ़े चार, पाँच बजे तक कार्यक्रम शांतिपूर्वक चलता रहता था।

शांति-सेना-मण्डल की ओर से किशोर-शांति दल का रूपान्तर पिछले दो वर्षों से तरुण-शांति-सेना में हो गया है। तब से विशेष रूप से कालेज के छात्रों के बीच ही सम्पर्क पर जोर रहा है। तरुण-शांति-सेना में हाईस्कूल के छात्रों का समावेश हो सके, ऐसा माना तो है ही, इस दृष्टि से तरुण-शांति-सेना के सदस्यों की उम्र १८ से २२ वर्ष निश्चित की गयी है। दोनों तरफ दो वर्ष का अपवाद भी रखा गया है। अतः १२ वर्ष के उम्र के छात्र भी इसमें शामिल हो सकते हैं।

—अमरनाथ

राजगीर सर्वोदय-सम्मेलन-सम्बन्धी आवश्यक सूचनाएँ

सर्वोदय-समाज का आगामी वार्षिक सर्वोदय-सम्मेलन दिनांक २५ से २८ अक्तूबर, '६९ तक राजगीर, बिहार में हो रहा है। इस वर्ष का यह सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय सर्वोदय-सम्मेलन के रूप में आयोजित हो रहा है। सम्मेलन से पूर्व ३-२४ अक्तूबर को संघ-अधिवेशन और २५ को प्रातः बौद्ध संघ की ओर से बौद्ध-स्तूप की स्थापना तथा शान्ति-गोष्ठी होगी।

हर साल की भांति इस बार भी सम्मेलन में पहुँचने के लिए रेलवे कंसेशन की सुविधा रहेगी। रेलवे-कंसेशन के लिए रेलवे-बोर्ड से कार्रवाई चल रही है। निवास-शुल्क पांच रुपये प्रति व्यक्ति रखा गया है।

बिहार प्रदेशदान की अपनी अन्तिम मंजिल के सन्निकट पहुँच चुका है। वहां के अधिकांश साथी बिहारदान के काम में लगे हैं। उन पर व्यवस्था का कम-से-कम बोझ पड़े, इसलिए सम्मेलन में पहुँचनेवाले साथियों से प्रार्थना है कि वे अपने पहुँचने की सूचना और निवास-शुल्क की राशि १० अक्तूबर तक भेज दें।

स्वागत-समिति की ओर से उन्हीं लोगों के लिए निवास की व्यवस्था हो सकेगी, जिनकी ओर से १० अक्तूबर तक उक्त सूचना प्राप्त हो जायगी।

सम्मेलन में पहुँचने के लिए 'बोगी' अथवा रेल के आरक्षण की विशेष व्यवस्था आने जाने यानी दोनों तरफ की यात्रा के लिए कराने चाहिए, ताकि वापस जाने में कठिनाई न हो।

प्रान्तीय तथा जिला सर्वोदय-मण्डलों से प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही संघ-कार्यालय को यह सूचना करें, कि उनको कितने कंसेशन सर्टिफिकेट्स चाहिए।

—सर्व सेवा संघ
कैम्प कार्यालय, पो० गोपुरी
जि० वर्धा (महाराष्ट्र)

ग्रामस्वराज्य समिति की वैशाली गोष्ठी

www.vinoba.in

— एक झाँकी—

लिच्छवि राजपुरुषगण : "आम्रपाली ! यह क्या बात है कि तू लिच्छवियों के बराबर अपना रथ हाँक रही है ?"

आम्रपाली : "आर्य पुत्रो ! मैंने भगवान (बुद्ध) को भिक्खु-संघ के साथ कल के भोजन के लिए न्योता जो दिया है।"

लिच्छवि राजपुरुषगण : "आम्रपाली ! हमसे एक लाख मुद्रा लेकर यह भोजन हमें कराने दे।"

आम्रपाली : "आर्य पुत्रो ! आप मुझे वैशाली का समूचा राज्य दें तब भी यह जेवनार नहीं दूँगी।"

लिच्छवि राजपुत्रगण : (निराश होकर) "आम्रपाली ने हमें हरा दिया।"

प्रसंग है उस समय का जब अपने भ्रमण के ४५वें वर्ष में भगवान बुद्ध अपना अन्तिम वर्षावास बिताने वैशाली पहुँचे थे। आम्रपाली को जब यह खबर मिली कि बुद्धदेव उसकी आम्र-वाटिका में पधारे हैं तो वह उनके पास पहुँची और भिक्षु संघ सहित उनसे अपना आतिथ्य स्वीकार करा लायी।

प्रबन्ध-व्यवस्था

वैशाली के पुराने इतिहास की यह एक झाँकी वहाँ के अतिथि-सत्कार के गौरव का निदर्शन है। समय के साथ-साथ इस परम्परा में भी उलट-फेर होता रहा, लेकिन वह अभी टूटी नहीं है, बल्कि अक्षुण्ण है। इसका अनुभव उन लोगों को भी हुआ जो इस बार सर्व सेवा संघ के ग्रामस्वराज्य समिति की वैशाली गोष्ठी में बाहर से पधारे थे। भगवानपुर-रत्ती और उससे लगे गाँवों और टोलों के लोगों ने इस उत्साह का प्रदर्शन किया, जैसे वे किसी अनुष्ठान के आयोजन में लगे हों। भोजन-पान आदि में देर या किसी प्रकार की अनियमितता का प्रश्न नहीं था। बावन वर्ष पूर्व जब गांधीजी वहीं निकट के जिले चम्पारन में वहाँ के कृषकों पर हो रही ज्यादतियों और अत्याचारों की छान-बीन और उनमें निराकरण के उद्देश्य से गये थे तो उन्हें यही अनुभव मिला था कि रोजमर्रा के जीवन में बिहार के लोग समय का ध्यान नहीं रखते, बड़े लोग भी इसके अपवाद नहीं थे। लेकिन वैशाली गोष्ठी के इस अवसर पर बिहार के बारे में लोगों का अनुमान बदल गया और हर चीज नियमित ढंग से होने के कारण उन्हें सुविधा रही। आनेवाले लोगों को गाँववालों ने अपने बीच, अपने परिवारों में रखा और उनकी व्यवस्थित देखभाल का पूरा प्रबन्ध किया।

गोष्ठी के आयोजकों के मन में बराबर यह ख्याल बना रहता था कि वर्षा-पानी के दिन हैं, कहीं जोर की वर्षा होती रही तो बैठक के कार्यों और जे० पी० की सार्वजनिक सभा में बड़ी अड़चन होगी। स्वयं जे० पी० अपनी यह शंका जाहिर कर चुके थे कि वर्षा के दिनों में गाँव में बैठक रखने से कहीं लोगों को असुविधा और कार्य में व्यवधान तो न होगा। लेकिन प्रकृति ने भी गोष्ठी का कुछ इस तरह ख्याल किया कि गोष्ठी के चार दिनों—१४, १५, १६ १७ अगस्त—में वर्षा इतनी कम हुई कि कार्रवाइयों में कोई अड़चन न पड़ी और १६ अगस्त की शाम को वर्षा का न होना तो बड़ा ही सहायक हुआ क्योंकि सभा की कार्रवाई और जे० पी० का ढाई घंटे का भाषण अबाध हुआ।

गोष्ठी में पधारे मुख्य लोगों में थे सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, शंकरराव देव, धीरेन्द्र भाई, सिद्धराज ढड्ढा, ठाकुरदास बंग, श्रीमती सुमन बंग, हरिवल्लभ परीख, गोविन्दराव देशपांडे, वैद्यनाथ प्रसाद चौधुरी, ध्वजाप्रसाद साहु, चंडीप्रसाद भट्ट और आचार्य राममूर्ति। बिहार की युवा-शक्ति के प्रतिनिधि-स्वरूप सर्वश्री कैलाश, निर्मल सिंह, सर्वनारायण, विद्यासागर, नवलकिशोर आदि भी उपस्थित थे। वाराणसी स्थित गांधी-विद्या संस्थान के सर्वश्री बी० बी० चटर्जी, नागेश्वर प्रसाद, इन्द्र नारायण तिवारी और रफीक खाँ की उपस्थिति और योगदान से विचार-मंथन में और भी सहायता मिली। वैशाली-क्षेत्र में कार्य कर रहे कार्यकर्ता श्री लक्ष्मण देव तो उपस्थित थे ही, क्योंकि उनके ही क्षेत्र में बैठक का आयोजन हुआ था और आयोजन को सफल बनाने में उनका सहयोग मूल्यवान भी रहा। इनके अतिरिक्त उस क्षेत्र के विशिष्ट नागरिक, गृहस्थ, शिक्षक और अभियान में रुचि रखनेवाले अन्य लोग मौजूद थे। भगवानपुर रत्ती गाँव के, जहाँ बैठक का आयोजन हुआ था, लोगों का; विशेषकर चन्द्रशेखर बाबू, विन्दा बाबू, श्यामनारायणजी व गाँव के मुखियाजी आदि का प्रयास, योगदान और आतिथ्य महत्वपूर्ण रहा, क्योंकि बिना उसके गोष्ठी को वह सफलता न मिल सकती थी जो मिली। ग्रामदान आन्दोलन के इतिहास में संभवतः यह पहला मौका था जब गाँववालों ने किसी अखिल भारतीय स्तर की गोष्ठी की पूरी व्यवस्था स्वयं अपने अभिक्रम और अपने साधनों से किया हो और वह भी ४-४ दिनों तक। रोज दोनों वक्त डेढ़-पौने दो सौ व्यक्तियों का जलपान तथा भोजन और हर चीज व्यवस्थित ढंग से, यह गाँव के लोगों के सौहार्द और उत्साह के बगैर संभव नहीं था।

भगवानपुर रत्ती और समीपवर्ती क्षेत्र

सर्व सेवा संघ की नवगठित ग्राम-स्वराज्य-समिति की इस पहली बैठक का स्थान, भगवानपुररत्ती ग्राम, उत्तरबिहार के मुजफ्फरपुर जिले का वैशाली के प्राचीन खंडहरों से चार मील की परिधि-सीमा पर स्थित मुजफ्फरपुर व हाजीपुर से क्रमशः २७ मील व १९ मील दूर एक विकासशील गाँव है। गाँव में बिजली है। कई घरों में सेप्टिक पाखानों की व्यवस्था है और स्त्रियों-महिलाओं तक में भी शिक्षा-दीक्षा का अच्छा स्तर है। हाजीपुर-मुजफ्फरपुर सड़क निकट से ही गुजरती है, अतः आवागमन के साधन अच्छे हैं। भगवानपुर रत्ती गाँव की जनसंख्या २१५० है; जब कि पंचायत की जनसंख्या सम्प्रति ६१०० है, जिसमें २५५० मतदाता हैं। पंचायत के अन्तर्गत जमीन का रकबा २६ सौ एकड़ है, जो उपजाऊ भूमि है। पेशा मुख्यतः कृषि है, जिसमें धान, मकका, गेहूँ, गन्ना, तम्बाकू और मिर्चाई की उपज खास है। फलों

www.vinoba.in

में आम, लीची और केले की पैदावार मुख्य है। शिक्षा-दीक्षा तथा अन्य कुछ दृष्टियों से भी इस क्षेत्र ने अच्छी प्रगति की है। भगवानपुर रत्ती क्षेत्र में इस समय एक शिशु-शाला, लड़कियों तथा लड़कों के अलग-अलग सीनियर बेसिक-स्कूल, एक हायरसेकण्डरी स्कूल, एक अस्पताल, डाकखाना, कोऑपरेटिव व महिला-मंडल तथा खादी-भंडार चल रहे हैं। इस क्षेत्र में चार पुस्तकालय भी चल रहे हैं, जिनमें से दो में लगभग दो हजार पुस्तकें हैं। पिछले वर्ष सफाई में भगवानपुर रत्ती को प्रथम पुरस्कार मिला था। गाँव में सफाई का स्तर अच्छा है, यह बाहर से आनेवाले लोगों ने भी महसूस किया।

ग्रामस्वराज्य की इस गोष्ठी (पिछली गोष्ठी सर्व सेवा संघ के राजघाट, वाराणसी स्थित केन्द्र में जुलाई १९६६ में हुई थी) के लिए यह वैशाली-क्षेत्र स्थित भगवानपुर रत्ती गाँव क्यों चुना गया इसके पीछे भी एक कारण था। जैसा कि समिति के संयोजक आचार्य राममूर्ति ने स्वयं कहा, "यह तीसरी गोष्ठी पिछली गोष्ठियों से ज्यादा महत्वपूर्ण है। बिहारदान अब शीघ्र ही होगा; कुछ प्रखण्ड और रह गये हैं जिनका दान होना अभी बाकी है। अक्तूबर में राजगीर में सम्मेलन भी होगा। यहाँ बैठकर आज १४ ता० से १७ ता० की शाम तक कई बातों का जवाब ढूँढ़ना है। प्रश्न उठता है कि विचार करने के लिए यह स्थान क्यों चुना गया, यह गोष्ठी एक कोने में क्यों रखी गयी? उत्तर है कि यह वैशाली क्षेत्र अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है। शायद समाज ने गणतंत्र का पहला अभ्यास यहीं किया था। यह क्षेत्र महावीर की जन्म-भूमि और बुद्ध की कर्म-भूमि रहा है। विचारों के उद्भव, मंथन और विकास के लिए भी यह क्षेत्र प्रसिद्ध रहा है। यहीं वह प्रसिद्ध बौद्ध-बैठक भी हुई, जिसमें बौद्ध धर्मानुयायी दो सम्प्रदायों में—हीनयान और महायान—में बँट गये। अन्तिम कारण यह कि इस गाँववालों ने ग्रामदान करने के पहले जितना वाद-विवाद, खोज-बीन की उतनी किसी गाँववालों ने नहीं की। महावीर और बुद्ध से लेकर आज तक ये कुछ कारण हैं जिनके सन्दर्भ में यह निश्चित किया गया कि राज्यदान के करीब यह गोष्ठी यहीं होनी चाहिए।" इतिहास ने अपने विकास-क्रम में जिस क्षेत्र को पहिले से चुन रखा हो, कौन जाने ग्रामस्वराज्य के आन्दोलन में भी वही क्षेत्र अग्रणी बने, इसलिए संयोग ने इस प्रसिद्ध क्षेत्र को ही गोष्ठी के लिए चुना, इतना कहना पर्याप्त होगा।

वैशाली-दर्शन

समिति की गोष्ठी १४ ता० अपराह्न से शुरू हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्ढा अभी आये नहीं थे; अतः सर्व सेवा संघ के मंत्री और समिति के सदस्य श्री ठाकुरदास बंग ने गोष्ठी के पहले दिन की अध्यक्षता की जिम्मेदारी सम्भाली। शाम को सिद्धराजजी आ गये, अतः दूसरे दिन से उन्होंने अपना कार्य-भार सम्भाला। दूसरे दिन १५ अगस्त को शाम ४ बजे बाहर से आये लोग, और कुछ अन्य स्थानीय लोग वैशाली दर्शन के लिए निकले।

भारत के प्राचीन इतिहास में वैशाली का महत्वपूर्ण स्थान है। आर्य-सभ्यता का प्रभुत्व और विकास इस भाग में दक्षिण-बिहार की अपेक्षा पहले हुआ था। इस क्षेत्र की कृषि और वाणिज्य के केन्द्र के रूप में प्रसिद्धि हुई। लेकिन उससे भी अधिक इस क्षेत्र को प्रसिद्धि का कारण बना यहाँ का शक्तिशाली गणतंत्र जिसकी स्थापना यहाँ के वृज्जियों अथवा लिच्छवियों ने की। यह गणतंत्र प्राचीन भारत के गणतंत्रों में सबसे ज्यादा मशहूर हुआ। संसार के अन्य भागों में जहाँ गणतंत्र की बात तो दूर, व्यवस्थित राजतंत्र की भी स्थापना नहीं हुई थी वहाँ इस क्षेत्र ने गणतंत्र का प्रथम प्रयोग कर संसार के सामने एक आदर्श रखा। वैशाली के अतिरिक्त उसके समकालीन अन्य संघ-राज्य थे: मिथिला के विदेह, पिप्पलिवन के मोरिय, कुसिनारा के मल्ल, पावा के मल्ल, रामगाम के कोलिय आदि।

बुद्ध के समय में यह नगरी अपने वैभव के चरम उत्कर्ष पर थी। तिब्बती अनुश्रुति के अनुसार उसमें तीन विभाग थे, जिनमें क्रमशः ७,०००, १४,००० और २१,००० घर थे। महावग्ग में वैशाली को 'आढ्य, समृद्ध और बहुजन-संकुल' नगर कहा है, जिसमें ७,७०७ प्रासाद, ७,७०७ कूटागार, ७,७०७ आराम और ७,७०७ कमल-पुष्करणियाँ थीं; उसके ७,७०७ राजाओं के लिए, नगर में उतने ही प्रासाद थे और अनेक चैत्य और विहार भी थे। लिच्छवियों ने इन सबका दान करके बुद्ध को दे दिया। इनके अतिरिक्त आम्रपाली ने अपना विशाल आम्रवन और बालिका ने बालिकाराम (वर्तमान बालुकाराम) भी बुद्ध को दिये। लिच्छवियों ने महावन में एक कूटागार-शाला भी बुद्ध के लिए बनवायी, जहाँ उन्होंने अनेक सूत्रों का उपदेश किया। स्वयं बुद्ध लिच्छविगण के उत्तमगणों के विषय में इतने आश्वस्त थे कि उन्होंने अपना मत प्रकट किया कि यह अजातशत्रु जैसे सशक्त सम्राट् के आक्रमण के सामने भी अजेय ठहरेगा। उनकी सम्मति में संघ के उत्तम लक्षण ये थे: (१) नियत समय पर सदस्यों की पूर्ण उपस्थिति के साथ संघ-सभा के अधिवेशन; (२) एकमत या समग्र भाव से संघ में उपस्थित होना, एकमत या समग्र भाव से अधिवेशन समाप्त करना और एकमत या समग्र भाव से संघ के कर्तव्य कर्म करना, (३) जो प्रज्ञप्ति स्वीकृत नहीं हुआ है उसे स्वीकार न करना; जो स्वीकृत हो चुका है उसका समुच्छेद न करना और वज्जि संघ के यथास्वीकृत पूर्वनिश्चयों को लेकर उनके अनुसार कार्य करना; (४) वज्जि संघ के संघस्थिरों, वृद्धों, परिणायकों या नेताओं का सत्कार, उनके प्रति गौरव का भाव, सम्मान और उनके वचनों का पालन; (५) वज्जि संघ के भीतरी और बाहरी चैत्यों की मान्यता बनाये रखना और पूर्व-काल से नियत धार्मिक कृत्यों को जारी रखना; (६) वज्जि संघ के धार्मिक अरहन्तों का सम्मान; (७) वज्जि स्त्रियों का सम्मान; कुल-स्त्री और कुल-कुमारियों का अपहरण या उनके साथ बलपूर्वक व्यवहार का सर्वथा निषेध। किन्तु संघ की सफलता शासन पर इतना निर्भर न थी, जितना कि लोगों के चरित्र-बल पर। बुद्ध ने एक स्थान पर स्वयं कहा है: "संघ के सदस्य विलास और आलस्य से रहित थे, वे महीन वस्त्रों के गद्दों पर न सोकर लकड़ी के तकिये लगाते थे और धनुर्विद्या में उत्साह से भाग लेते थे। वे कोमल, सुकुमार और हाथ-पाँव

से निर्बल न थे।" कालान्तर में संघ के ये सभी गुण समाप्त होते गये और आपसी फूट-वैमनस्य के तात्कालिक कारण के परिणाम-स्वरूप मगध के शक्तिशाली राज्य ने उसे हड़प लिया। इस गौरवपूर्ण वैशाली के अवशेष आज भी वैशाली क्षेत्र में मौजूद हैं, जिन्हें गोष्ठी में आप लोगों ने देखा और जिन्हें कोई भी वहाँ जाकर देख सकता है।

www.vinoba.in

सार्वजनिक सभा

१६ अगस्त को तीसरे पहर ४ बजे से क्षेत्र के लोगों ने सार्वजनिक सभा का आयोजन किया था, और सभा हुई भी बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में और व्यवस्थित ढंग से। बालुकाराम के मैदान में सभा का आयोजन किया गया था। मुख्य वक्ता थे जयप्रकाश नारायण; सभा की अध्यक्षता की जिम्मेदारी आचार्य राममूर्ति ने निभायी। सबसे पहले जे० पी० ने तरुण शान्ति-सैनिकों को शान्ति-सेना की शपथ दिलायी और उन्हें क्रान्तिकारी शान्ति की स्थापना के लिए दीक्षित किया। तत्पश्चात् भगवानपुररत्ती, परशुरामपुर तथा अन्य गाँवों में बीघा-कट्ठा दान करनेवाले गृहस्थों के नाम सुनाये गये। तदनंतर आतिथेय प्रदान करनेवाले क्षेत्र के प्रमुख नागरिक श्री चन्द्रशेखर बाबू ने मंच से लोगों के सामने अपनी बात रखी, जिसमें ये शब्द मार्मिक थे, "मैं अपना रास्ता भूल गया था। लेकिन आज अपने जन-प्रिय नेता को अपने बीच पाकर मैंने अपनी भूल सुधार ली है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपके (जे० पी०) ही नेतृत्व में रह कर सर्वोदय-काम को पूरा करूँगा और आपके ही मार्गदर्शन में ग्रामस्वराज्य लाने में सहयोग करने का संकल्प करता हूँ।" इसके बाद क्षेत्र के कार्य के लिए जे० पी० को थैलियाँ भेंट की गयीं। ५०१ रु० की थैली भेंट करते हुए बिन्दा बाबू ने कहा, "यह पाँच सौ एक रुपया भूदान और सर्वोदय-कार्य को आगे बढ़ाने के लिए जयप्रकाश बाबू को समर्पित करता हूँ। वे ऐसी ज्योति फैलायेंगे, जिससे सारे प्रखण्ड के लोगों का हृदय-परिवर्तन होगा।" वैशाली शिक्षक संघ की ओर से जे० पी० को १०१ रु० की थैली भेंट की गयी।

इसके बाद श्री शंकरराव देव का संक्षिप्त किन्तु सार-गर्भित भाषण हुआ। प्रसंगवश श्री जयप्रकाश नारायण के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए शंकररावजी ने कहा, "हिन्दुस्तान में बहुत-से आचार्य प्राचार्य हैं, लेकिन उनके (जे० पी०) जैसा आचार्य वे स्वयं ही हैं। उनका विशेषत्व इसमें है कि वे सारे देश को अपना शिक्षण-क्षेत्र मानते हैं और जिन्हें शिक्षा देनी है उन्हें लोक-शिक्षण मिलना चाहिए ऐसी उनकी मान्यता है।" संसार में प्रजातंत्र के विकास और वैशाली के प्रजातंत्र के संदर्भ में शंकररावजी ने हिन्दुस्तान के वर्तमान लोकतंत्र की चर्चा की और वर्तमान खतरों से बचने का निर्देश करते हुए उन्होंने इन शब्दों के साथ भाषण समाप्त किया: "अभी जो करना है वह कत्ल और कानून से नहीं, करुणा से करना है, नहीं तो पाश्चात्य देशों से अधिक सफलता नहीं मिलेगी। आप इस बात को सदैव स्मरण रखिए कि यह परिवर्तन की क्रिया अखंड चलनी चाहिए और यह अखंडता का गुण अहिंसक क्रान्ति में है। आगे जो महान काम करना है उसका यह छोटा प्रारम्भ है।"

शंकरराव देव का भाषण होते-होते जे० पी० को भेंट करने के लिए श्री श्रीपति शाही की ओर से छः सौ रुपये की एक थैली आ गयी, जिसे श्री रामनारायण बाबू ने भेंट किया। भेंट का यह सिलसिला संभवतः आगे भी चले इसका ध्यान करके सभापति महोदय ने कहा, 'सभा समाप्त हो जाने के बाद कैलाश बाबू जयप्रकाश बाबू की ओर से एक पैसे से लेकर सौ, हजार पैसे तक या जो भी मिलेगा वह स्वीकार करेंगे।" क्षेत्र के लोगों के प्रति कृतज्ञता-प्रकाश करते हुए सभापति ने आगे कहा, "इन सभी मित्रों के लिए हमारे मन में बहुत-बहुत आभार है, हम बहुत कृतज्ञ हैं। नया समाज बनाने का जो काम शुरू किया है वह जारी रहेगा। एक दिन आयेगा जब वैशाली-क्षेत्र, जो अपने गणराज्यों के लिए मशहूर था, वह नये जमाने में एक एक गाँव के ग्राम स्वराज्यके लिये मशहूर होगा।"

इसके पश्चात् जे० पी० का भाषण शुरू हुआ। लोग जे० पी० का भाषण भी सुन रहे थे और इस बात पर मन ही मन आश्चर्य भी कर रहे थे कि १६ अगस्त की उस तारीख में जब देश के सभी वर्गों के मान्य विशिष्ट व्यक्ति राष्ट्रपति के चुनाव से सम्बन्धित सरगर्मी में या तो हाथ बँटाकर या उसके दर्शक बन कर दिल्ली में जमघट किये हुए थे, जे० पी० उत्तरी बिहार के एक सुदूरवर्ती गाँव में ग्राम-स्वराज्य का अलख जगाने की चेष्टा में लगे हुए थे। लोगों को सहज ही उस प्रसंग की याद हो आयी, जब १५ अगस्त १९४७ को जब दिल्ली और सारा देश आजादी की खुशियाँ मनाने में लगा हुआ था और गांधीजी नोआखाली की पैदल यात्रा कर दंगा-शमन और वास्तविक स्वराज्य की कल्पना साकार करने की चेष्टा में लगे हुए थे।

ढाई घण्टे के अपने लम्बे भाषण में जे० पी० ने उपस्थित लोगों का ध्यान कई बातों की ओर दिलाया और उनसे अपील की कि वे ग्रामस्वराज्य के लाने और उसके संगठन में पूरी शक्ति से जुटें, क्योंकि वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं और आपदाओं के बीच ग्रामवासियों और तदनुसार देश की मुक्ति और विकास का यही एक मार्ग है। उस अंचल की जागरूकता, ग्रामदान में उसके उत्साह और स्थानीय अन्य बातों से शुरू करके सारी दुनिया के सन्दर्भ में आज की स्थिति का जे० पी० ने विवेचन किया। वैशाली के पुराने गणतंत्र, आज की राजनीतिक अस्थिरता, विभिन्न राजनीतिक दलों-गुटों के विभिन्न वादों-इरादों, प्राचीन भारत में जनता का अपना अभिक्रम, ग्रामदान द्वारा देश की समस्याओं का सुलझाव, गाँव-गाँव के राज्य से असली स्वराज्य की प्राप्ति, दुनिया के क्रान्तिकारियों, विशेषकर लेनिन के कर्तृत्व, पश्चिमी बंगाल की वामपंथी सरकार और उसके कुछ विशिष्ट कार्य, परिस्थिति और वातावरण का संकेत, सही रास्ते का अवलम्बन, इन सभी बातों का जे० पी० ने अपने भाषण में समावेश किया। देश की समस्याओं के सन्दर्भ में बोलते हुए एक स्थान पर जे० पी० ने कहा, "लोग पूछते हैं कि आप जो ग्रामदान की बात करते हैं तो देश की समस्याओं से क्या इसका कोई सम्बन्ध है? तो राजनीति की तो बहुत बड़ी समस्या है, जिसका हल ढूँढ़ना है। पाकिस्तान ने एक डिक्टेटर अयूब खाँ दिया तो क्या समस्या हल

हो गयी और फिर उनका क्या हुआ? एशिया और अफ्रीका के मंच पर और भी 'डिक्टेटर' आये, लेकिन कोई रास्ता निकला? लोग कहते हैं, राजनीति में आ जाइए तो रास्ता निकलेगा। लेकिन ऐसा सोचना तो एक सीमित दायरे में रहकर सोचना है।" ग्रामस्वराज्य के सन्दर्भ में गांधीजी का जिक्र करते हुए जे० पी० ने कहा, "अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पहले जब गांधीजी का ध्यान उनके एक मित्र ने इस बात की ओर खींचा कि हिन्दुस्तान के नये संविधान में ग्रामस्वराज्य का जिक्र तक नहीं है तो गांधीजी ने उत्तर में दुःख प्रकट किया और मात्र एक लेख लिख दिया, बस। क्योंकि वह जानते थे कि भारत का संविधान यहाँ की जनता बनायेगी, बड़े-बड़े वकील और कानून-शास्त्री नहीं बनायेंगे।" दुनिया के महान क्रान्तिकारियों के सन्दर्भ में लेनिन का जिक्र करते हुए जे० पी० थोड़ी देर भाव-विभोर हो गये, वाणी मूक, शरीर अविचल फिर भाषण प्रारम्भ किया। उस समय लोगों को सहज ही अरस्तू के उस कथन की याद हो आयी जब उसने कहा था, "डियर इज प्लेटो बट ट्रूथ इज डियरर," यानी, प्लेटो प्रिय जरूर हैं लेकिन सत्य प्रियतर है।

गृहस्थों, नागरिकों की सभा

१७ ता० को तीसरे पहर से उसी बालिका विद्यालय के भवन में क्षेत्र के गृहस्थों, नागरिकों, शिक्षकों तथा महिलाओं आदि की सभा हुई, जिसमें ४ दिनों तक ग्रामस्वराज्य-सम्बन्धी गोष्ठी हो चुकी थी। दोपहर के पहले ही गोष्ठी का कार्य समाप्त हो चुका था, अतः प्रकृति ने भी शायद अब पानी बरसाना ठीक समझा। वर्षा के कारण जे० पी० को आने में कुछ देर हो गयी। उनके आने पर विन्दा बाबू ने अपनी एक कविता का पाठ किया, महिलाओं की ओर से गृहस्थ-परिवार की एक ग्रेजुएट लड़की ने जे० पी० का अभिनन्दन प्रस्तुत किया, दो अन्य लोगों ने भी विदा के अवसर पर दो शब्द कहे और फिर जे० पी० ने पूछे प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा, "हम सबका आपने कितना ध्यान रखा। अभी थोड़ी देर में विदा लेना है, लेकिन जैसा स्नेह दर्शाया तो मन में आता है→

यदि मैं जिला-संयोजक होता तो...

जिलादान की व्यूह-रचना के लिए सर्व सेवा संघ के मंत्री द्वारा दिशासूचन

एक मित्र ने, जो जिला सर्वोदय मंडल के संयोजक हैं, मुझसे पूछा कि उनके जिले के दान की क्या योजना हो? मैं विचार करने लगा कि यदि मैं जिला-संयोजक होता तो क्या करता...? और जो कुछ सूझा, वह सुझाव के रूप में प्रस्तुत है।

मान लीजिए, इस जिले की लोकसंख्या भारत के एक औसत जिले की लोकसंख्या के जितनी यानी पन्द्रह लाख है, जिसमें से बारह लाख ग्रामीण लोकसंख्या है, और इस जिले में बारह प्रखंड हैं, तो सर्वप्रथम प्रत्येक प्रखंड में पूरा समय देनेवाले और कार्यकर्ता बनने योग्य व्यक्ति की खोज करनी चाहिए। हमारे देश में शिक्षितों में से काफी तरुण, क्या शहरों में और क्या देहातों में, नौकरी की राह में खाली बैठे रहते हैं! गांधी-शताब्दी के सुअवसर पर उन्हें 'देश के लिए एक साल' देने का आवाहन कर सकते हैं। ऐसा प्रयोग पलामू जिले में और दक्षिण भारत में किया गया है। उसके अच्छे परिणाम नजर आये हैं। इनमें से कई तरुण आगे प्रशिक्षण देकर तैयार किये जा सकते हैं, और इस काम के लिए उन्हें वैतनिक या अवैतनिक रूप में रख लिया जा सकता है।

प्रखंड में दस-बीस ऐसे लोगों को जुटायें, जो लोकसेवक या सर्वोदय-मित्र हों एवं पूरा या आंशिक समय इस काम में देते हों। इनमें साहित्य एवं पत्रिका पहुँचाकर, इनके विचार ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य के लिए अनुकूल हो जाय, यह प्रयत्न किया जाय। शिविर या गोष्ठी आयोजित करने का, प्रखंड-स्तरीय या जिला-स्तरीय प्रयत्न भी किया जाय। इनमें से कई लोकसेवक, शान्ति-सैनिक या शान्ति-सेवक भी बनाये जायें। राजकीय पक्षों के प्रमुख कार्यकर्ता, प्रमुख सरकारी अधिकारी, जिला परिषद् के अध्यक्ष, पंचायत-समितियों के सभापति, शिक्षक संघ के अध्यक्ष, अखबारों के सम्पादक, सहकारी संस्थाओं के प्रमुख इत्यादि को अनुकूल करने में प्रथम एक माह का समय दिया जाय। इसके लिए इनके पास साहित्य, पत्रिकाएँ आदि पहुँचायी जायँ और इनसे चर्चा की जाय। जिले में प्रतिकूलता अधिक हो, तो जयप्रकाशजी-सरीखे नेता का एक दिन का दौरा वातावरण अनुकूल बनाने के लिए रखा जाय। गांधीजी की कृपा से हर जिले में कम-बेसी प्रमाण में रचनात्मक संस्थाएँ हैं ही। इनका भी उपयोग बहुत अच्छी तरह किया जा सकता है।

ऐसे कम-से-कम बारह प्रखंड खोज लेने के बाद (अपवादस्वरूप किसी ब्लाक में से एक से अधिक भी हो, और किसी ब्लाक में से कोई न भी मिले, तो कोई हर्ज नहीं) उन्हें उनके प्रखंड के काम की जिम्मेदारी सौंपी जाय। वैसे ही नगरों में रहनेवाले पूरा या आंशिक समय देनेवाले काफी लोकसेवक, सर्वोदय-मित्र बनायें जायँ। ऐसे १५-२० व्यक्ति पूरा समय देनेवाले बन जाने पर (या इसके पूर्व भी) इनका एक सप्ताह का शिविर लिया जाय। इसमें ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य, शान्ति सेना, ग्रामाभिमुख खादी, लोकनीति आदि का अच्छा विश्लेषण किया जाय। फिर हरेक शिविरार्थी को 'माडेल' भाषण दिया जाय। उसके आधार पर वे भाषण दे सकें और जनता का शंका-समाधान अच्छी तरह कर सकें, ऐसा प्रयत्न किया जाय। इसका प्रत्यक्ष अभ्यास भी कराया जाय। साथ-साथ कार्यकर्ता नित्य कताई करें, अध्ययन का सिलसिला चले, इस प्रकार एक 'कोड आफ काण्डक्ट', आचार-संहिता बने। हर तीन माह में दो से तीन दिन के ऐसे शिविर अवश्य लिये जायँ।

प्रखंडदान करवाने के लिए उपयोगी साहित्य, पोस्टर्स, पैम्फलेट्स, परचे, घोषणापत्र आदि छपवाये जायँ। फिर जिला परिषद्,

---

→कि और कुछ दिन आपके साथ रहूँ।" जे० पी० ने शंका-समाधान किया और तब विदा-गान समाप्त हुआ। साथ ही वर्षा के क्रम ने जोर पकड़ा और साढ़ेसात बजे शाम तक हम लोग हाजीपुर स्टेशन पहुँचे तब भी अनवरत वर्षा का क्रम टूटा नहीं बल्कि आधी रात तक चलता रहा। —रामभूषण

www.vinoba.in

पंचायत समिति, शिक्षक संघ, सहकारिता आन्दोलन के कार्यकर्ता, स्कूल कालेज के अध्यापक, पंच-सरपंच, राजनीतिक कार्यकर्ता, पटवारी या लेखपाल, ग्रामसेवक आदि का प्रखंड-स्तरीय दो-तीन दिनों का शिविर लिया जाय। शिविर में भोजन आदि का प्रबंध स्थानीय खर्चे से हो। संभव हो तो इस शिविर के लिए प्रखंड-स्तर पर स्थानीय लोगों में से प्रखण्ड-ग्रामदान-प्राप्ति समिति बनायी जाय और यही शिविर के लिए स्वागत-समिति का काम करे। इसी प्रकार से जिलादान के लिए जिला-स्तरीय जिला ग्रामदान-प्राप्ति समिति बनायी जाय।

किसी भी प्रखण्ड-स्तरीय शिविर लेने के पहले उसकी पूर्वतैयारी पन्द्रह दिन पूर्व दो-तीन समर्थ कार्यकर्ताओं द्वारा होनी चाहिए, जिसमें ग्रामदान की जानकारी देनेवाले पर्चे का वितरण हो, ग्रामदान की चर्चाएँ हों और सप्ताह भर घूम सकनेवाले शिक्षक इत्यादि के अलावा कम-से-कम १५-२० नागरिकों को तैयार किया जाय। शिविर के लिए किसी प्रदेश के या क्षेत्र के अच्छे सर्वोदय-व्याख्याता को बुलाया जाय। शिविर में बौद्धिक चर्चा के साथ-साथ भावनाओं को जगाने के लिए ग्रामदान-गीतों के सामुदायिक गायन का आयोजन हो। सप्ताह के अंत में कार्य का लेखाजोखा होकर 'फालो अप' की योजना बनायी जाय और प्रखण्डदान का काम अधूरा रहा हो तो वह निश्चित अवधि में पूरा करने की जिम्मेदारी प्रखण्ड ग्रामदान-प्राप्ति समिति पर डाली जाय, और उनकी मदद के लिए दो-तीन कार्यकर्ताओं को प्रखण्डदान पूरा करने के लिए छोड़ दिया जाय। ये कार्यकर्ता गाँव-गाँव में पदयात्रा के समय जो ग्रामशान्ति-सैनिक बनाये गये हैं, उनकी सहायता से इस कार्य को पूरा करेंगे। इस कार्य को करते-करते जो समय देनेवाले नागरिक मिलें उनका संग्रह करते जाना चाहिए। और उनके क्रियात्मक प्रशिक्षण का प्रबंध पदयात्राओं द्वारा किया जाय। ऐसा करते-करते आरम्भ की १०-१५ की संख्या तीन माह में २५ हो सकती है। इन पच्चीस में से तीन से पाँच कार्यकर्ता 'फालो अप' के लिए, तीन पूर्व-तैयारी के लिए, दो तीन कार्यकर्ता जिला-दफ्तर एवं शान्ति-सेना, अर्थसंग्रह, साहित्य-प्रचार, इत्यादि के लिए रखे जायँ। बचे हुए पन्द्रह कार्यकर्ता हमेशा पदयात्राओं में रहें। इतनी संख्या सतत प्राप्ति-पदयात्राओं में लगी रहे। प्रखण्ड के शिक्षक, ग्रामसेवक, छुट्टियों में विद्यार्थी एवं अन्य नागरिकों को साथ लेकर इनके सहारे पन्द्रह टोलियाँ सप्ताह में निकालने का आयोजन किया जाय।

इस प्रकार हर माह में तीन पदयात्राएँ निकलें तो चार माह में सारे जिले में पद-यात्राओं का क्रम पूरा किया जा सकता है, और प्रखण्डदान का काम भी पूरा होता चला जायगा। जिलादान होने पर इसी प्रखण्डदान-प्राप्ति समिति का अनुभव के आधार पर पुनर्गठन करके इसे ग्रामस्वराज्य-समिति का स्वरूप दिया जाय। ग्रामसभाओं का गठन, भूमि वितरण, लोकनीति का प्रचार ग्रामकोष इत्यादि काम करने में ग्रामसभाओं को मदद करना, यह इस समिति का काम रहे। गठन, भूमि-वितरण, लोकनीति का प्रचार, ग्रामकोष इत्यादि काम करने में ग्रामसभाओं की मदद करना, यह इस समिति का काम रहे।

एक जिलादान के लिए पच्चीस से पचास हजार रुपया खर्च आयेगा। इसके लिए लोक-सेवक तथा सर्वोदय-मित्र का चन्दा, सूतांजलि आदि स्रोतों को व्यापक बनाया जाय। अलावा इनके, कुछ विशेष आयोजन भी करने होंगे। फसल-कटनी के समय एक माह इस काम में दिया जाय। उस समय अनाज-संग्रह किया जाय। उसी मास में जिला परिषद् एवं पंचायत-समितियों के कर्मचारी व प्राथ-मिक शिक्षक (इनकी संख्या हर जिले में दस हजार के लगभग है) अन्य सरकारी कर्मचारी, स्कूल कालेज के शिक्षक, विद्यार्थी, भूदान-दाता-प्रादाता, ग्रामदानी गाँवों के नागरिक, सहकारी संस्थाएँ, भूस्वामी, व्यापारी, उद्योग-पति, चैरिटेबल ट्रस्ट आदि से अर्थ-संग्रह किया जाय। अनुकूल शहरों में एवं गाँवों में हर घर से कम-से-कम एक रुपया ग्रामस्वराज्य-आन्दोलन के लिए इकट्ठा करने पर जोर लगाया जाय। यदि किसी बड़े सर्वोदय-नेता को बुलाकर उन्हें थैली-समर्पित करने से अर्थ-संग्रह में आसानी होती हो, तो ऐसा आयोजन किया जाय।

जिले के एवं प्रान्तीय अखबारों में जिला-दान अभियान के समाचार लगातार आते रहने चाहिए। लेख आदि भी इस विषय पर आते जायँ। वातावरण अनुकूल बनाने के लिए और व्यापक विचार-प्रचार की दृष्टि से इस शक्ति का उपयोग करने का एक भी अवसर नहीं चूकना चाहिए।

ऊपर की योजना दिशासूचन के लिए है। स्थानीय परिस्थिति के अनुसार इसमें आवश्यक परिवर्तन किये जायँ। इन सब कार्यों के परि-णामस्वरूप वातावरण अनुकूल बनेगा, कार्य-कर्ता बढ़ेंगे, आवश्यक अर्थ-संग्रह होगा। परिणाम यह होगा कि ग्रामदान की गंगा प्रवाहित होगी और जिलादान के रूप में यह गंगा की धारा व्यापकतर होती जायगी।

—ठाकुरदास बंग

श्री जयप्रकाश नारायण का कार्यक्रम

सितम्बर

३	पटना : बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ की बैठक
४	दिल्ली
५ से ८	पंजाब का दौरा
९	दिल्ली
१०	पटना
११	राँची (विनोबा-निवास)
१२	कलकत्ता
१३-१४	बम्बई : अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद
१५	आस्ट्रेलिया के लिए रवाना
१६-२७	आस्ट्रेलिया-यात्रा
२८	दिल्ली वापस
२८-३०	दिल्ली : बादशाह खान का आगमन

'गाँव की आवाज'

सम्पादक : आचार्य राममूर्ति

गाँव गाँव में ग्रामस्वराज्य की स्थापना में प्रयत्नशील 'गाँव की आवाज' पाक्षिक के ग्राहक बनिए तथा बनाइए। भाषा सरल तथा सुबोध और शैली रोचक होती है।

एक वर्ष का शुल्क : ४.०० रुपये

एक प्रति : २० पैसे

व्यवस्थापक, पत्रिका विभाग,
सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

www.vinoba.in

विवेकरहित विरोध

बनाम

बुनियादी परिवर्तन-प्रक्रिया

"शासन के खिलाफ विवेकरहित विरोध चलाया जाय तो उससे अराजकता की, अनियंत्रित स्वच्छंदता की स्थिति पैदा होगी और समाज अपने हाथों अपना नाश कर डालेगा।"

—गांधीजी

आज देश में आये दिन घेराव, धरना, लूटपाट, आगजनी, कथित सत्याग्रह की कार्रवाइयाँ लोकतंत्र में सामूहिक विरोध के हक के नाम पर होती हैं।

सर्वोदय-आन्दोलन भी वर्तमान समाज, अर्थ और शासन-व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह है। किन्तु, वह इसका एक नियंत्रित, रचनात्मक एवं अहिंसक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

इसके लिए पढ़िए, मनन कीजिए :—

(१) हिन्द स्वराज्य — गांधीजी

(२) ग्रामदान — विनोबाजी

फिर एक जिम्मेवार नागरिक के नाते समाज-परिवर्तन की इस क्रान्तिकारी प्रक्रिया में योग भी दीजिए।

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म शताब्दी-समिति)
दुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर-३ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

सर्वोदय की जागतिक चेतना : पूरे विश्व में गांधी-शताब्दी-समारोह

www.vinoba.in

—श्री रंगनाथ रा० दिवाकर और श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त की यूरोप-यात्रा के अनुभव—

कुछ दिन पूर्व लन्दन में मार्टिन लूथर किंग प्रतिष्ठान की ओर से एक गोष्ठी का आयोजन हुआ। गोष्ठी का विषय था—"हम कैसा समाज चाहते हैं और उसे कैसे बनायें?" इस गोष्ठी में राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति के मानद मंत्री तथा गांधी-स्मारक निधि व गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री रंगनाथ रा० दिवाकर भाग लेने जा रहे थे।

यूनेस्को के प्रस्ताव के अनुसार गांधी-शताब्दी दुनिया भर में मनायी जा रही है। अतः यह उचित समझा गया कि श्री दिवाकर अपनी इस लन्दन-यात्रा का सदुपयोग यूरोप के कुछ देशों की गांधी-शताब्दी समितियों से मिलकर गहरा सम्पर्क स्थापित करने में करें। राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति के संगठन मंत्री व गांधी-स्मारक निधि के मंत्री श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त को कहा गया कि वे श्री दिवाकर के साथ जायें। २६ जून से ३१ जुलाई के पाँच हफ्तों में इस दल ने इंग्लैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम, नारवे, स्वीडन, पश्चिम जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, पूर्व जर्मनी तथा रूस, कुल दस देशों का भ्रमण किया।

यूरोप के देशों में शताब्दी-कार्यक्रम

ये दोनों इन देशों में गांधी-शताब्दी समितियों के सदस्यों तथा पदाधिकारियों से मिले। उन्हें उनके अभिक्रम के लिए धन्यवाद देते हुए अनेक कार्यक्रम उन्होंने सुझाये।

इस टोली को यह लगा कि कई देशों के राज्याध्यक्ष शताब्दी-समितियों में दिलचस्पी ले रहे हैं और हमारे दूतावास उन्हें मदद करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।

पूर्वी यूरोप में दल को लगा कि उनके पास गांधी-शताब्दी मनाने की कुछ ठोस योजनाएँ हैं, जिन्हें वे पूरी ईमानदारी से मूर्त रूप देने की कोशिश में हैं। यद्यपि मार्क्स और लेनिन का रास्ता अहिंसा से नहीं जुड़ता तो भी शान्ति व सामाजिक न्याय के क्षेत्र में गांधीजी की देन को वे पूरी तरह मानते हैं। सभी मुल्कों में भारतविद् लोगों को भारत के प्रति बड़ा लगाव है। मास्को में दूसरी चर्चाओं के साथ ही इस बात पर सबने सहमति प्रकट की कि रूस के तीन तालस्ताय-संग्रहालयों में से एक में गांधी-कक्ष हो और दिल्ली के गांधी-संग्रहालय में तालस्ताय-कक्ष बने। राज्य-सरकारों के मार्फत बनायी गयी समितियों से मिलने के अलावा यह दल अहिंसा में गहरा विश्वास रखनेवाले लोगों द्वारा निर्मित समितियों से भी मिला। ऐसे लोग ज्यादातर स्वीडन व इंग्लैण्ड में हैं। मानवता की सेवा में गांधी के तरीके से लगी दूसरी संस्थाओं से भी चर्चाएँ हुईं।

दल पेरिस में स्थित यूनेस्को के उप-महासंचालक से भी मिला। यूनेस्को, गोष्ठी व प्रकाशन के कार्यक्रमों द्वारा गांधी-शताब्दी मनाने में विशेष दिलचस्पी ले रहा है।

शांति व अहिंसा के प्रयोग

लंदन की गोष्ठी में यह लगा कि उन लोगों को जानने की बड़ी ही तीव्र इच्छा है, जो अपनी जिम्मेदारी का अहसास करते हैं। यूरोप के ऐसे बुद्धिमान लोगों के दिमाग में इस बात से बड़ी परेशानी हो रही है कि वहाँ के समाज में मनुष्य और उसके वातावरण का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विकास हुए बिना तकनीकी ज्ञान तेजी से बढ़ रहा है। सभी मुल्कों में ऐसे लोगों की छोटी-छोटी सभाएँ की गयीं और टोली ने पाया कि लोगों में उद्योग के विकेन्द्रित तरीके की जरूरत, व्यक्ति के योगदान के लिए विस्तृत प्रजातांत्रिक आधार, विज्ञान का विनाशक उपयोग करने के खिलाफ कड़ी देखरेख, उद्योगों द्वारा पृथ्वी पर भयानक गंदगी बढ़ने का खतरा, आनेवाली पीढ़ी के लिए समाज के काम में उत्तरदायित्वपूर्ण तरीकों से अपने को प्रकट करने के रास्तों की कमी आदि विषयों पर बड़ी चिन्ता व्याप्त है।

इंग्लैंड में बरमिंघम के नजदीक स्टैन्टसन गिल्ड है। इस समुदाय ने शहर के बच्चों को दस्तकारी का प्रशिक्षण देने के लिए एक ग्रामीण केन्द्र बनाया है। फ्रांस में बरडो के नजदीक एक अल्बर्ट स्वाइत्जर गाँव है। यहाँ सामूहिक रहन-सहन का एक प्रयोग चल रहा है, जिसके अनुसार शहर के लोग यहाँ आकर सेवा व सादगी के प्राकृतिक व सामाजिक जीवन का आनन्द लेते हैं। बेल्जियम में ब्रुसेल्स के नजदीक एक शांति विश्वविद्यालय है, जहाँ अहिंसा व शांति पर सप्ताहांत तथा छुट्टियों में पाठ्यक्रम चलते हैं। इनमें सभी देशों के युवक भाग लेते हैं। स्टाकहोम, स्वीडन में तरुणों का एक सर्वोदय समाज है, जहाँ पर ये लोग गांधीजी के तरीकों का अध्ययन कर उन्हें शहरी जीवन के व्यवहार में उतारते हैं। पश्चिम जर्मनी में फ्रेंकफर्ट के नजदीक गाँव में डा० हिन्डर-दल है। ये लोग अहिंसक रहन-सहन के प्रयोग के आधार के रूप में दस्तकारी, प्रकाशन व बागवानी को अपनाये हुए हैं। वियना के नजदीक आस्ट्रिया में गांधीजी की शिष्या मीरा बहन एक भिक्षुणी की-सी जिन्दगी बिता रही हैं और बीथोवन व गांधी पर पुस्तक लिख रही हैं। पश्चिम यूरोप के कई मुल्कों में भारतीय संस्कृति, दर्शन तथा योग के प्रति लोगों में बड़ा उत्साह है। नारवे में ऐसे एक संघ के कई हजार सदस्य हैं, ऐसी जानकारी मिली।

शांति की संस्थाएं

टोली जहाँ भी गयी, उसने पाया कि लोगों में इस बात की उत्कट इच्छा है कि दुनिया में झगड़े न हों व शांति कायम रहे। इस कार्य के लिए कई संस्थाएँ उन मुल्कों में है। टोली के लोगों ने लन्दन की क्वेकर संस्था, अहिंसा स्कूल, व वार रेसिस्टर्स इण्टरनेशनल, नारवे के नोबुल शान्ति संस्थान व शान्ति रिसर्च संस्थान, स्वीडन के अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति रिसर्च संस्थान और समाजवादी देशों के शान्ति संस्थान के लोगों से वार्ता व चर्चाएँ कीं। टोली ने भारत में गांधीजी के रास्ते पर चलनेवाली संस्थाओं—जैसे, गांधी स्मारक निधि, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान तथा सर्व सेवा संघ का यूरोप के शान्ति-प्रयत्नों के साथ समन्वय करने के रास्ते ढूँढने की कोशिश की।

—प्रभाष जोशी

www.vinoba.in

दैनंदिनी १९७०

प्रति वर्ष की भाँति सर्व सेवा संघ की सन् १९७० की दैनंदिनी शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। इस दैनंदिनी के ऊपर प्लास्टिक का चित्ताकर्षक कवर लगाया गया है। इसकी कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

१. इसके पृष्ठ रूलदार हैं।

२. इसके प्रत्येक पृष्ठ पर गांधीजी के प्रेरक वचन दिये गये हैं।

३. इसमें भूदान-ग्रामदान आन्दोलन की अद्यतन जानकारी तथा सर्व सेवा संघ के कार्य की संक्षेप में जानकारी दी गयी है।

४. नित्य की तरह यह दैनंदिनी दो आकारों में छपायी गयी है, जिसकी कीमत प्रति दैनंदिनी निम्न अनुसार है :

(अ) डिमाई साइज : ९" × ५॥" रु० ३.५०
(ब) क्राउन साइज : ७॥" × ५" रु० ३.००

आपूर्ति के नियम

१. विक्रेताओं को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा।

२. एकसाथ ५० अथवा उससे अधिक प्रतियाँ मँगाने पर ग्राहक के निकटतम स्टेशन तक दैनंदिनी फ्री पहुँच भिजवायी जायगी।

३. इससे कम संख्या में दैनंदिनी मँगाने पर पैकिंग, पोस्टेज और रेल-महसूल ग्राहक को वहन करना पड़ेगा।

४. भेजी हुई दैनंदिनी वापस नहीं ली जाती, अतः आप इसकी उतनी ही प्रतियाँ मँगायें, जितनी आप बेच सकें।

५. दैनंदिनी की बिक्री पूर्णतया नकद की रखी गयी है, अतः आप कीमत अग्रिम भिजवाकर या वी० पी० या बैंक के मार्फत दैनंदिनी प्राप्त कर सकते हैं।

६. आर्डर देते समय आप अपना नाम, पता और निकटतम रेलवे स्टेशन का नाम सुवाच्य लिखिए और यह निर्देश स्पष्ट रूप से दीजिए कि दैनंदिनी की बिल्टी वी० पी० या बैंक से भेजी जाय या आप दैनंदिनी की रकम अग्रिम भिजवा रहे हैं।

अक्सर देखा गया है कि देरी से आर्डर आने के कारण अनेकों को निराश होना पड़ता है। इसलिए विशेष रूप से अनुरोध है कि उपर्युक्त शर्तों को ध्यान में रखते हुए आप अपना क्रयादेश अविलम्ब भिजवा देंगे।

आपका,
दत्तोबा दास्ताने
सहमंत्री
सर्व सेवा संघ-प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी-१

प्रादेशिक पत्र

राजस्थान की चिट्ठी

प्रदेशदान की शृंखला में जयपुर जिले का दूसरा अभियान ९ से १४ अगस्त तक गोविंदगढ़ व आमेर, दोनों विकासखंडों में संयुक्त रूप से चला। अभियान का संचालन डा० दयानिधि पटनायक ने किया।

गोविंदगढ़ विकासखंड के कुल ३४ पंचायत-क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं की टोलियाँ पहुँचीं और १०२ गाँवों में से ८१ गाँवों का ग्रामदान हुआ, यानी गोविन्दगढ़ का प्रखण्डदान पूरा हुआ। आमेर विकासखण्ड की ७ ही पंचायतों को लिया जा सका। इसमें ६ पंचायतों के पूरे २४ ग्राम और एक पंचायत के ३ में से १ गाँव का ग्रामदान हुआ। इस प्रकार इस अभियान में १०६ गाँवों के ग्रामदान हुए।

पूरे राजस्थान में ग्रामदान की उपलब्धि

(१५ अगस्त '६९ तक)

जिला	ग्रामदान	घोषित	ग्रामसभा
१. जयपुर	२४५	२०	२०
२. टोंक	५	१	१
३. सीकर	३९८	४६	४६
४. सिरोही	८२	१४	११
५. नागोर	९७	७	७
६. भरतपुर	९६	—	—
७. चित्तौड़गढ़	८७	६	६
८. उदयपुर	८८	—	—
९. भीलवाडा	६	२	२
१०. डूंगरपुर	२७५	४१	४०
११. बाँसवाडा	५७	८	८
१२. कोटा	३८	—	—
१३. जैसलमेर	३	—	—
१४. सवाईमाधोपुर	२	—	—
१५. अलवर	२३	—	—
१६. अजमेर	२	—	—
१७. बूंदी	१	—	—
कुल :	१,५०५	१४५	१४१

—सत्येन्द्र स्वामी

पुस्तक-परिचय

अबला नहीं, सबला

लेखिका : सुश्री सरला बहन

प्रकाशक : ग्रामभावना प्रकाशन, आश्रम, पट्टीकल्याणा, जिला करनाल, हरियाणा।

पृष्ठ-संख्या : ११६; : मूल्य रु० १.५०

जैसे नाम से ही स्पष्ट है, यह पुस्तक स्त्री-शक्ति के जागरण की दृष्टि से लिखी गयी है। इस पुस्तक की लेखिका सुश्री सरला बहन जन्म से विदेशी होते हुए भी हृदय से पूर्णतया भारतीय हैं और वर्षों से उत्तराखण्ड में स्त्री-समाज की सेवा के काम में लगी हुई हैं। कौसानी, जिला अलमोड़ा में इनके द्वारा संचालित लक्ष्मी आश्रम में बुनियादी शाला, खेती आदि प्रवृत्तियाँ आज भी चल रही हैं।

ग्रामदान-अभियान के सिलसिले में गत वर्ष सुश्री सरला बहन ने बिहार के गाँवों में पदयात्रा की और उस समय गाँव की बहनों के साथ अनेक विषयों पर इनकी चर्चा भी हुई थी। उन्हीं चर्चाओं के आधार पर यह पुस्तक लिखी गयी है। सुश्री सरला बहन द्वारा मूल हिन्दी में ही लिखी हुई यह पुस्तक है।

समाज ने स्त्री को अनेक रूपों में देखा है—कभी वह देवी रही है, तो कभी दासी बनी है; एक ओर ममतामयी माता है तो दूसरी ओर प्रेरणादायिनी संगिनी है; कहीं वह पूज्या है तो कहीं दूरतः त्याज्या भी है। लोगों ने स्त्री के त्याग, प्रेम, सेवा और सहिष्णुता का भरपूर परिचय पाया है, लेकिन समाज-परिवर्तन करने की और नव-समाज-निर्माण करने की उनकी शक्ति अभी प्रकट होना बाकी है और इसी सुप्त शक्ति को जगाने का आवाहन सुश्री सरला बहन ने इस पुस्तक में किया है।

अशिक्षा, हीनभाव, पर्दाप्रथा, दहेज-प्रथा, अन्धविश्वास, मानसिक दासता आदि स्त्री-समस्या के सभी पहलुओं के अलावा गाँव में व्याप्त गरीबी, निरक्षरता, मद्यपान, शोषण, मुकदमेबाजी आदि अन्य बुनियादी समस्याओं पर भी लेखिका ने इस पुस्तक में सुन्दर विवेचन किया है और स्त्री-जाति से परोक्ष रूप से अपील की है, कि जिस प्रकार आज तक बहनों ने घर को सँभाला है, परिवार को पाला-पोसा है, गार्हस्थ्य जीवन में माधुर्य-संचार किया है, उसी प्रकार अब समूचे गाँव को अपना कुटुम्ब मानकर ग्रामीण जीवन को सुधारने में वे अपना बहुमूल्य योगदान दें, अपने त्याग, सेवा और स्नेह की सुगन्ध ग्रामसमाज में फैलायें और गाँव को गोकुल बनायें।

आमुख में श्रीमती सुचेता कृपलानी ने सही ही कहा है कि यह समाजसेवकों के लिए ही नहीं, बल्कि सभी के लिए बहुत उपयोगी और प्रेरणादायी पुस्तक है।●

मृत्युंजय (नाटक)

लेखक : श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र,

प्रकाशक : स्वस्तिक प्रकाशन, वाराणसी—५

पृष्ठ-संख्या : १३४; मूल्य : रु०२.५०

कोई भी साहित्यिक कृति जब फरमाइश के लिए नहीं, बल्कि रचनाकार की आन्तरिक भावना से प्रेरित और अनुप्राणित होकर लिखी जाती है तो उसमें रसानुभूति की सम्भावना बढ़ जाती है।

हिन्दी के यशस्वी नाटककार श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र ने भारत की जातीय संस्कृति को केन्द्र मानकर गांधी-सम्बन्धी अपनी अनुभूति को मृत्युंजय नाटक में साकार किया है। इस नाटक में आये गांधीजी के संवाद और विभिन्न परिस्थितियों के उनके विभिन्न कर्म लेखक के मतानुसार भारतीयता के दर्पण बन गये हैं, जिसमें भारतीयता का मृत्युंजयी रूप दीख पड़ता है।

'मृत्युंजय' में मिश्रजी ने गांधी-जीवन की मुख्य घटनाओं और विचारों के रूप में भारतीय संस्कृति की अभिनव व्याख्या प्रस्तुत की है। मिश्रजी ने गांधी-जीवन-चरित्र के अंशों को सिर्फ संवादों में नहीं बाँधा है। इसे वे सफल नाटक का गुण नहीं मानते। वे नाटक को काव्यकला का ही अंग मानते हैं। काव्य में कवि को देखना होता है कि रस के स्थल कहाँ और कैसे उत्पन्न किये जायँ। यदि काव्य में करुणा, भय, उत्साह, अनुराग और हास्य के अवसर न आयें तो वह काव्य पाठकों को रस-सिक्त न कर पायेगा।

लेखक का दावा है कि गांधीजी और अन्य पात्रों के जो व्यवहार और संवाद नाटक में प्रस्तुत किये गये हैं वे सीधे उन्हींसे मिले हैं। नाटक पढ़ते समय अनेक स्थलों पर ऐसा संशय होता है कि संवाद पूर्ण प्रामाणिक नहीं हैं। वस्तुतः घटनाएँ और विचार लेखक के भावालोक में जिस रूप में अवतरित हुई उसी रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाठक में काव्यजन्य रसानुभूति पैदा करने के लिए नाटककार ने ऐसे अनेक प्रसंग उपस्थित किये हैं, जो सामान्य रसानुभूति प्राप्त करनेवाले पाठक को रुचिकर लगेंगे।

हमारी जो पीढ़ी गांधी-युग की घटनाओं और विचारों के तारतम्य से अनभिज्ञ है, उसका इस रोचक कृति द्वारा रसानुभूतिपूर्ण ज्ञानवर्धन होगा। —रुद्रभान

कश्मीर-घाटी में गांधी-शताब्दी

श्री अच्युत भाई देशपाण्डे पिछली ८ जुलाई से ही कश्मीर-घाटी में गांधी-शताब्दी कार्यक्रम के सिलसिले में दौरा कर रहे हैं। १४ अगस्त तक के दौरे में कुल ५७ सभाओं में आपने गांधी-विचार का संदेश पहुँचाया। सभाएँ मुख्य रूप से विद्यालयों में हुईं। ●

बम्बई सर्वोदय-मण्डल की गतिविधि

गत जून-जुलाई महीने में बम्बई सर्वोदय-मण्डल की ओर से बम्बई में ८२२५.६४ रु० की साहित्य-बिक्री की गयी, मराठी, गुजराती, हिन्दी की सर्वोदय-पत्रिकाओं के ४७४ ग्राहक बनाये गये।

श्री जयप्रकाश नारायण तथा आचार्य दादा धर्माधिकारी की भाषण-मालाएँ आयोजित की गयीं। तरुण शान्तिसेना और सर्वोदय-पात्र के शिविर हुए। ●

इलाहाबाद विश्वविद्यालय समन्वय समिति का गठन

विभिन्न राजनैतिक पक्षों के नेताओं, प्रमुख नागरिकों और विश्वविद्यालय-अधिकारियों की एक बैठक में विश्वविद्यालय में स्थायी शान्ति की दृष्टि से एक विश्वविद्यालय समन्वय समिति श्री सुरेशराम भाई के संयोजकत्व में गठित की गयी है। ●

भूदान-यज्ञ १-९-'६९ रजिस्टर्ड नम्बर एल. ३५४ [पहले से डाक-व्यय दिये बिना भेजने की स्वीकृति प्राप्त] लाइसेन्स नम्बर पी ३४

www.vinoba.in

राँची जिले के खूँटी अनुमण्डल में ग्रामदान अभियान

कुछ दिन पहले आदिवासी क्षेत्र ग्रामदान-अभियान की दृष्टि से बहुत अनुकूल प्रतीत होता था और ग्रामदान के विरोधी कहा करते थे कि यह आंदोलन तो आदिवासियों के बीच ही चल रहा है, गैर-आदिवासी इस आंदोलन से अलग ही हैं। लेकिन आज बिहार का आदिवासी क्षेत्र ही इस आंदोलन के लिए कठिन प्रतीत हो रहा है।

राँची जिले का खूँटी अनुमण्डल इस आंदोलन के लिए पहले बड़ा ही कठिन प्रतीत होता था। उस क्षेत्र में विचार-प्रचार एवं ग्रामदान-पत्र पर हस्ताक्षर कराने के लिए सहरसा जिले के कर्मठ कार्यकर्ता श्री महेन्द्रजी अपने अन्य सहयोगियों के साथ इस अभियान की सफलता के लिए मुस्तैदी से जुट गये। गाँव-गाँव में ग्रामदान का उद्देश्य एवं कार्यक्रम समझाया। कार्यकर्ताओं के प्रयास से आदिवासी जनता ग्रामदान आंदोलन के उद्देश्य को समझ तो जाती थी, लेकिन बिना आदिवासी राजनीतिक नेताओं की आज्ञा के हस्ताक्षर करने के लिए तैयार नहीं होती थी। श्री महेन्द्रजी के प्रयास एवं विनोबाजी के संपर्क से खूँटी अनुमण्डल के बिरसा सेवा दल के कुछ कार्यकर्ताओं ने इस आंदोलन में सक्रिय सहायता देने का आश्वासन ही नहीं दिया, बल्कि आंदोलन की सफलता के लिए जुट भी गये। परिणामस्वरूप खूँटी अनुमण्डल का कार्य तीव्रता से बढ़ रहा है। खूँटी अनुमण्डल के कुल नौ प्रखंडों में से तीन प्रखंड बुण्डू, तमार और अरकी का प्रखंडदान घोषित हो गया है। शेष छह प्रखण्डदान कराने का प्रयास जारी है।

खूँटी अनुमण्डल में कुल १०८८ चिरागी गाँव हैं जिनकी आबादी ४,८८,८६५ है। यह क्षेत्र जंगल एवं पहाड़ से भरा हुआ है। साथ ही कृषि का समय होने के कारण ग्रामीण खेत पर काम करते रहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कार्यकर्ताओं को गाँव के लोगों से मिलना कठिन होता है। फिर भी समाज-परिवर्तन की इच्छा रखनेवाले सामाजिक कार्यकर्ताओं के उत्साह में कोई भी कमी नहीं आती है। बिना खाये-पिये कीचड़ एवं पत्थर से भरे हुए रास्ते तय करते हुए ग्रामीणों तक पहुँचकर ग्रामदान के उद्देश्य को समझाते हैं।

प्राप्त सूचनानुसार इस अनुमण्डल के छह प्रखण्डों में १५५ गाँवों का ग्रामदान घोषित हो चुका है। १५४ गाँवों में से ५० प्रतिशत से अधिक लोगों ने हस्ताक्षर कर दिया है। २७१ गाँवों में ४० प्रतिशत से अधिक लोगों ने दान-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया है। १६१ गाँवों में प्रारम्भिक कार्य शुरू हो गया है। सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं शिक्षक, विकास प्रखण्ड-पदाधिकारी तथा अन्य सरकारी कर्मचारी आंदोलन की सफलता में लगे हैं।

—रामनन्दन सिंह

इस माह के अंत तक सिंहभूम जिलादान पूर्ण करने का प्रयास

चाईबासा में सरकारी अधिकारियों के बीच बोलते हुए विनोबाजी ने कहा कि सिंहभूम शीघ्र जिलादान में आ सके, इसके लिए सेवक-वर्ग खड़ा किया जाय। इसमें उराँव, मुण्डा और बिरसा-दल के लोगों को आगे आना चाहिए। सरकारी सेवक एवं सर्वोदय-सेवक उनकी मदद करें। इसी सिलसिले में बाबा ने कहा कि 'मुण्डा का दिमाग हजारों साल से परती रहा है। उनके दिमाग में बहुत खाद जमा हो गयी है। उसका उपयोग करने से सिंहभूम जिला का दान शीघ्र हो सकेगा और भारत को बहुत बड़ा लाभ मिलेगा।

'सिंहभूम जिलादान में इसीलिए देर हो रही है कि आज तक जितने लोग उनकी सेवा के लिए आये, सबने उन्हें खूब लूटा है। इसीलिए वे शंकाशील बन गये हैं।' उन लोगों को विश्वास दिलाते हुए बाबा ने आगे बताया कि 'ग्रामदान से अधिक लाभ हरिजन, परिजन एवं गिरिजन को मिलनेवाला है। इसलिए बिना किसी शंका के आगे आकर उन्हें ग्रामदान के कार्य को उठा लेना चाहिए। ग्रामदान सबके हित के लिए हैं।'

सिंहभूम के उपायुक्त श्री अरुण पाठक ने इस माह के अंत तक जिलादान पूरा करने का आश्वासन दिया एवं सभी प्रखंडों में अपना समय देने का भी वचन दिया। इस जिले के ३२ प्रखंडों में से १६ प्रखंडों का जिलादान घोषित हो गया है। शेष १६ प्रखंडों में जोर-शोर से काम चल रहा है।

—लखनलाल सिंह

फर्रुखाबाद में जिलादान का दूसरा अभियान

जिलादान-अभियान हेतु फर्रुखाबाद जनपद के सर्वोदय-विचार के करीब १५० परिषदीय अध्यापकों, श्री गांधी आश्रम के कार्यकर्ताओं तथा जनप्रतिनिधियों का प्रशिक्षण-शिविर जिला परिषद के जवाहर-कक्ष में १६, १७, १८ अगस्त '६९ को आयोजित किया गया। इसमें सर्वश्री रामजी भाई, स्वामी कृष्णस्वरूपजी, प्रकाश भाई एवं चन्द्रभान भाई ने प्रभावशाली ढंग से ग्रामस्वराज्य के विचार का महत्त्व और उसकी आवश्यकता समझायी और शिविरार्थियों से गाँववालों को समझाकर ग्रामदान-संकल्प-पत्र भराने के लिए तूफान की गति से काम करने की अपील की।

शिविर में जिलाधिकारी, अध्यक्ष जिला परिषद सहित अनेक अधिकारियों और परिषदीय सदस्यों ने भी भाग लिया।

२१ अगस्त से २५ सितम्बर '६९ तक जिले भर में ग्रामदान-शिविर और ग्रामदान-संकल्प-पत्र भराने का तूफानी आयोजन किया गया है, ताकि २ अक्तूबर '६९ को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सौवें जन्म-दिवस पर सच्ची श्रद्धांजलि के रूप में जिलादान अर्पित किया जा सके।

जिले में अबतक १,५९० ग्रामदान और राजेपुर और उमर्दा प्रखण्डदान हो चुके हैं।

—अवधराम भाई

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।